मूल्य : 25 रुपये
अप्रैल - जून, 2021

वर्ष : 10, अंक : 40

नर्मदा समग्र

नर्मदा सुत, नदी अनुरागी

स्व. श्री अनिल माधव दवे जी

चतुर्थ पुण्य स्मरण (18 मई 2021)

'नर्मदा समग्र संकल्प दिवस'

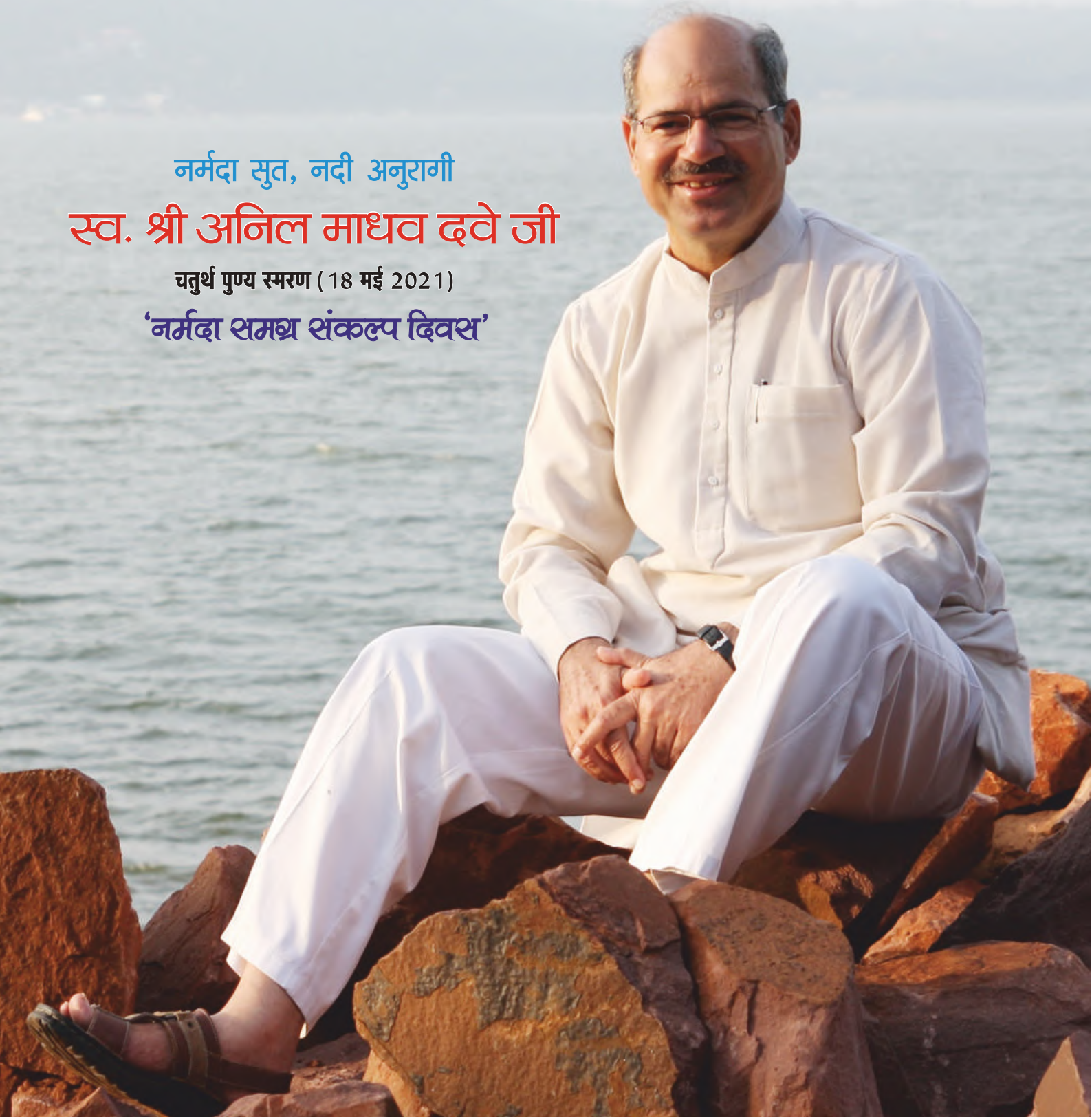

Mohan Nagar @mohanjinagar · May 18

#स्मृति

प्रकृति पुत्र स्व. अनिल माधव दवे जी के

🌹🌹।। चतुर्थ पुण्य स्मरण।।🌹🌹

पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य माननीय सुरेश जी सोनी ने भारत भारती परिवार के साथ भारत भारती औषधीय उद्यान में पीपल का पौधा रोपा।

@kssapre @narmada_samagra @ChouhanShivraj

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 10
अंक : 40
माह : अप्रैल-जून 2021

संपादक
कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल
डॉ. सुदेश वाघमारे
संतोष शुक्ला

आकल्पन
संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

मुद्रण
नियो प्रिंटर्स
17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क
'नदी का घर' सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com
www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

18 मई, 2021 पुण्यतिथि - नर्मदा समग्र संकल्प दिवस

1. संपादकीय 05
2. अनिल जीः ऋषि परम्परा के धवल प्रतिनिधि 06
3. मध्यप्रदेश पर्यावरण के पितामह 08
4. बड़नगर की पावन धरा के लाल हमारे अनिल जी 10
5. ओजोन परत, पर्यावरण और श्री दवे 12
6. नर्मदा अंचल के वृक्ष - अंजन 14
7. मैकल पर्वत श्रृखंला देश का सबसे पुराना अरण्यक 21
8. जलाधिकार : एक यात्रा 22
9. पश्चिमी देशों की कथनी और करनी में अन्तर 24
10. समुद्र में प्लास्टिक प्रदूषण फैला रही नदियाँ 25
11. नर्मदा की सहायक नदियाँ - चांदनी नदी 27

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

@narmadasamagra @narmada_samagra @narmadasamagra

11.05.2021 केंद्रीय मंत्री श्री प्रह्लाद पटेल जी, अपने अलिराजपुर प्रवास के दौरान नर्मदा समग्र के प्रकल्प रेवा सेवा केंद्र, ग्राम ककराना पधारे। अपने इस निजी प्रवास पर उन्होंने उनकी परिक्रमा और ककराना से जुड़ी कुछ यादें स्थानीय कार्यकर्ताओं से साझा की। उनकी सुपुत्री के जन्मदिवस के अवसर पर उन्होंने सपरिवार नर्मदा जी के दर्शन किए, रेवा सेवा केंद्र पर पौधारोपण (त्रिवेणी - नीम, पीपल और बरगद) और गौ-पूजन किया। इस अल्प प्रवास के दौरान उन्होंने नर्मदा समग्र द्वारा संचालित नदी एम्बुलेंस के सेवा कार्य को और रेवा सेवा केंद्र के माध्यम से सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में की जारी गतिविधियों के बारे में जाना और उसकी सराहना की तथा कुछ अच्छे सुझाव दिए और कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

रेवा सेवा केंद्र ककराना पर रतलाम सांसद श्री गुमान सिंह डामोर जी का 27.05.21 को उनके क्षेत्र प्रवास के दौरान आना हुआ। उन्होंने नर्मदा समग्र के कार्यों विशेष कर नदी एम्बुलेंस के बारे में जानकारी प्राप्त की और केंद्र पर पौधारोपण भी किया।

सम्पादकीय

नर्मदा समग्र त्रैमासिक, अप्रैल से जून 2021 का अंक आपके हाथ में है। स्व. अनिल माधव दवे के व्यक्तित्व एंव उनके द्वारा कृतित्व की व्यापक खोज करता हुआ आलेख श्री राघवेंद्र गौतम ने लिखा है। इस आलेख में राघवेंद्र जी ने अनिल माधव दवे जी के सामाजिक कार्यों, राजनैतिक प्रबंधन, पर्यावरण चिंतन, नवाचार की भूमिका, जैसे अद्भुत गुणों का विवरण दिया है। ऐसे कठिन समय में जबकि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण को राष्ट्रीय हितों से जोड़ने वाले चिंतकों की कमी है तब उनकी अनुपस्थिति का तीव्रता से एहसास होता है। मिट्टी के घड़े, पलास और महुल पत्ते से बनाएं दोने पत्तल, नर्मदा में श्रद्धा के प्रतीक धातु के सिक्के उनके ऐसे प्रयोग है, जिन्हें पर्यावरण प्रेमी आज भी याद करते हैं।

मध्यप्रदेश पर्यावरण के पितामह शीर्षक से श्री संतोष शुक्ला जी ने अनिल माधव दवे जी पर लिखा है। वे उन दिनों को याद करते हैं जब नर्मदा तवा संगम बांद्राभान पर नदी महोत्सव मनाए गए। श्री अनिल जी की नदी महोत्सव अवधारणा हमें उन प्राचीन परम्पराओं से जोड़ती है, जो आज भी समादृत हैं।

श्री राजपाल सिंह राठौर का ललित लेख, 'बड़नगर की पावनधारा के लाल हमारे अनिल जी' उनके जन्म से लेकर सभी सक्रिय कार्यों के रूप रेखा का सजीव दर्शन करता है। श्री कैलास गोदुका का 'जलधिकार एक यात्रा' लेख जल के सरोकारो से अनिल जी की वैज्ञानिक आत्मीयाता की पड़ताल करता है। मैकल पर्वत श्रृखंला देश का सबसे पुराना अरण्यक प्रकृति प्रेमी संजय प्यासी जी का वैज्ञानिक आलेख है, जो नर्मदा अंचल की विशिष्ट प्रजातियों की चर्चा करता है। इस अंक से नर्मदा अंचल के वृक्षों को लेकर एक श्रृंखला आरंभ की जा रही है। जिससे नर्मदा को सदानीरा बनाएं रखने वाले सतपुड़ा और विध्यांचल पर्वतों की झलक प्राप्त की जा सकती है।

समग्रता से देखा जाए, तो यह अंक पर्यावरण चिंतन को लेकर ही समर्पित है। भले ही अवान्तर से वह श्री अनिल माधव दवे जी की पुण्यतीथि इस त्रैमास में होने से उनकी स्मृति से जोड़ा गया है। यह अंक आपको कैसा लगा यदि आप हमें अवगत करायेंगे, तो इससे निश्चित हमारे अगले अंक की गुणवत्ता में समृद्धि होगी।

पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण भाग जलवायु परिवर्तन भी है, जिसके दुष्परिणामों को लेकर संपूर्ण विश्व आक्रांत है मगर यह डर उसके चेतन और अवचेतन में यह बात अंकित नहीं कर पा रहा कि वर्तमान खतरनाक स्तर पर बढ़ता प्रदूषण तृतीय विश्व युद्ध के समान घातक होगा।

UNFCCC COP का अगला सम्मेलन ग्लास्गो में नवंबर में होने जा रहा है। पर्यावरण चिंतक, वैज्ञानिक इस बात को लेकर चिंतित है कि वहां पर भी बड़े देशों की आवाज के शोर में पर्यावरण की बातें महात्वपूर्ण स्थान नहीं ले पाएंगी। पूरा विश्व जानता है कि प्रदूषण फैलाने और उसको वर्तमान खतरनाक स्तर पर लाने में विकसित देशों की व्यापक भूमिका रही है। यह भी सही है कि जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम विकासशील देश और उनके नागरिक ही भुगत रहे हैं।

इन विकासशील देशों के नागरिकों का प्रदूषण फैलाने में लगभग नगण्य हिस्सा है। पर्यावरणविदों की चिंता है कि विकसित देशों ने विकासशील देशों को आर्थिक सहायता और निःशुल्क तकनीक उपलब्ध कराने का वादा किया था। किंतु वे वादे आकाश कुसुम सिद्ध हुए। न तो गरीब देशों को मुफ्त हरित तकनीक मिली और न ही आर्थिक पैकेज। इससे यह कहावत चरित्रार्थ होती है, 'जबरा मारे भी और रोने भी न दे'। ऐसे में विकासशील देश एक ही सहगान गा सकते हैं कि 'सबको सम्मति दे भगवान।' □□

अनिल जी : ऋषि परम्परा के धवल प्रतिनिधि

❑ राघवेंद्र गौतम

अनिल माधव दवे देश के उन चुनिंदा राजनेताओं में थे, जिनमें एक अद्वितीय बौद्धिक गुरूत्वाकर्षण मौजूद था। पानी, पर्यावरण, नदी और राष्ट्र के भविष्य से जुड़े हर सवालों पर उनमें गहरी दूरदृष्टि मौजूद थी। बांद्राभान नदी महोत्सव का आयोजन उनके बारीक प्रबंधकीय कौशल का अनूठा आयोजन था। अपने पूरे जीवन में हमें नदियों से, प्रकृति से, पहाड़ों से संवाद का तरीका सिखाते रहे। दुनिया भर में होने वाली पर्यावरण से संबंधित संगोष्ठियों और सम्मेलनों में वे 'भारत' के एक अनिवार्य प्रतिनिधि थे।

अनिल माधव दवे संघ की वैचारिक कोख से जन्मे एक महान प्रचारक थे। वे विभूतिकल्प व्यक्तित्व के मालिक थे लेकिन उनका यह मालिकाना हक खुद के लिए नहीं था। उनकी क्षमता, योग्यता, कौशल, अध्ययन, सौंदर्यबोध, संवेदनशीलता, सब कुछ उस समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित था जिसकी सेवा के लिए उन्होंने घर परिवार के जैविक और सांसारिक रिश्तों का पिंडदान कर दिया था। वे माँ भारती के उपासक थे और उनके व्यक्तित्व का अपार, असीमित फलक राष्ट्र के वैभव और पीड़ित मानवता की सेवा के विस्तार तक जाता था। वे विवेकानन्द और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवनदर्शन के जीवंत समुच्चय थे। उनका न होना इस समाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है क्योंकि उनके होने से समाज की आशाओं को भरोसे का संबल मिलता था। आज वे नहीं है इसलिए उनकी अपार संभावनाओं पर हम केवल अफ़सोस ही कर सकते हैं। निजी रूप से मेरे लिए उनका न होना एक अभिभावक की कमी का अहसास कराता है। वे एक शिल्पी थे जिनके हाथ और विचारों का स्पर्श आपको आपकी अंतरनिहित शक्तियों, क्षमताओं और सँभावनाओं को जाग्रत कर देता था। वे नैराश्य के तिमिर में अमावस के दीपक की तरह अपने आसपास प्रदीप्ती का प्रेरणादायक अहसास थे। उनका असमय चला जाना उनसे संबद्ध लोगों के लिए अंधेरे का डरावना अहसास कराता है। वे सही मायनों में एक महान परिव्राजक थे जिनका पाथेय सीधा सरल और सुस्पष्ट था। माँ भारती के परमवैभव के जिस सपने को हम नित्य गुनगुनाते है उसके लिए कर्म की कौशलता कहीं साक्षात सीखनी समझनी है तो हमें अनिल माधव दवे जी के जीवन को पकड़ना होगा। संघ कार्य, समाज कार्य, राजनीति, प्रबंधन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, पर्यावरणीय प्रबंधन, कल्पनाशीलता और निजी कौशलता सीखने का जीवंत विश्वविद्यालय अगर कहीं था, वह नदी के घर में बैठने वाले इस महान अधिष्ठाता से अन्य कोई दूसरा मेरे जीवन मे नहीं है। अनिल माधव दवे देश के उन चुनिंदा राजनेताओं में थे, जिनमें एक अद्वितीय बौद्धिक गुरूत्वाकर्षण मौजूद था। पानी, पर्यावरण, नदी और राष्ट्र के भविष्य से जुड़े हर सवालों पर उनमें गहरी दूरदृष्टि मौजूद थी।

उनके साथ संघ कार्य, जनअभियान परिषद,चुनाव प्रबंधन, नदी महोत्सवों, विश्व हिंदी समागम, अंतरराष्ट्रीय विचार महाकुंभ-उज्जैन सहित कई अवसरों पर मुझे काम करने का मौका मिला। उनकी विलक्षणता के आसपास होना कठिन था। अनिल जी ऐसे कठिन समय में असमय हमें छोड़कर चले गए, जब देश, समाज को उनकी जरूरत सबसे ज्यादा थी। मौजूदा दौर की सियासत में आज बौने कद के लोग प्रतिष्ठा पा जाते हैं,भरोसे की कमी खड़ी हो रही है । तब वे एक आदमकद राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता के नाते हमारे

बीच उन सवालों पर अलख जगा रहे थे, जो राजनीति के लिए वोट बैंक नहीं बनाते। सियासी आकाशगंगा में अनिल जी चुनिंदा शख्सियतों में एक थे जो जीवन के, प्रकृति के सवालों को मुख्यधारा की राजनीति में स्थापित कर रहे थे।

वे उदारमन, बौद्धिक संवाद में रूचि रखने वाले, नए नजरिये से सोचने वाले और जीवन की हर विधा को व्यवस्थित ढंग से व्यतीत करने वाले इंसान थे। नए विषयों को पढ़ना, सीखना और उन्हें अपने विचार परिवार के विमर्श का हिस्सा बनाना, उन्हें बखूबी आता था। वे परंपरा और आधुनिकता के अद्भुत समुच्चय थे। अगर ध्यान से देखा जाए तो भारत की ऋषि परंपरा के धवल प्रतिनिधि थे। शाखा लगाने से लेकर हवाई जहाज उड़ाने तक वे हर काम में निपुण थे। बांद्राभान नदी महोत्सव का आयोजन उनके बारीक प्रबंधकीय कौशल का अनूठा आयोजन होता था। बारीक इसलिए क्योंकि इतने भव्य कार्यक्रम की एक-एक चीज पर उनकी गहरी नजर होती थी। यही वैशिष्ट्य भोपाल में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में भी दुनिया भर के हिंदी सेवियों ने देखा। हर आयोजन की दिव्यता के साथ सादगी और एक अलग वातावरण रचना उनसे सीखा जा सकता था। सही मायने में उनके आसपास की सादगी में भी एक गहरा सौंदर्यबोध छिपा होता था। वे एक साथ कितनी चीजों को साधते हैं, यह उनके पास होकर ही जाना जा सकता था। उनका कृतित्व और जीवन पर्यावरण, नदी संरक्षण, स्वदेशी के युगानुकूल प्रयोगों को समर्पित था। वे स्वदेशी और पर्यावरण की बात कहते नहीं, करके दिखाते थे। उनके मेगा इवेंट्स में ,गोबर से लिपे तंबू, देशी मिट्टी के गणेश, तांबे के लोटे, मिट्टी के घड़े, कुल्हड़ से लेकर भोजन के लिए पत्ते की पत्तलें, उनकी जड़ों से प्रतिबद्धता बयान करती थीं। हर आयोजन में नवाचार करके उन्होंने सबको सिखाया कि कैसे परंपरा के साथ आधुनिकता को साधा जा सकता है।

चुनावी राजनीति में मुद्दों और छवियों के युग्म को विजयी समीकरण में कैसे तब्दील किया जा सकता है यह कला अनिल जी में अद्भुत थी। दिग्विजय सिंह के दस वर्ष के शासनकाल के बाद उमाश्री भारती जी के नेतृत्व में लड़े गए विधानसभा चुनाव और उसमें अनिल जी की भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उसके बाद के 2008, 2013 के चुनाव भी उनके प्रबंधन में जीते गए। सबको साथ लेकर चलना और साधारण कार्यकर्ता से भी, बड़े से बड़े काम करवा लेने की उनकी क्षमता मध्य प्रदेश के हमारे विचार परिवार ने बार-बार देखी और परखी थी।

बौद्धिकता-लेखन और संवाद से बनाई जगह, उनके लेखन में गहरी प्रामाणिकता, शोध और प्रस्तुति का सौंदर्य दिखता है। 'नर्मदा समग्र', 'सृजन से विसर्जन तक', 'शिवाजी व सुराज' (हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, मलयालम एवं तेलुगु भाषाओं में), 'शताब्दी के पाँच काले पन्ने (सन् 1990 से 2000)', 'सँभल के रहना अपने घर में छिपे हुए गद्दारों से', महानायक चंद्रशेखर आजाद', 'रोटी और कमल की कहानी', अमरकंटक से अमरकंटक तक', 'समग्र ग्राम विकास', 'Beyond Copenhagen: Yes I Can So Can We...', जैसी पुस्तकों के माध्यम से उनकी बौद्धिक क्षमताओं का परिचय मिलता था। आज मध्यप्रदेश में नदी संरक्षण को लेकर जो चिंता सरकार के स्तर पर दिखती है, उसके बीज कहीं न कहीं अनिल जी ने ही बोए, इसे कहने में संकोच नहीं करना चाहिए। वे नदी, पर्यावरण, जलवायु परिर्वतन,ग्राम विकास जैसे सवालों पर सोचने वाले राजनेता थे। नर्मदा समग्र के माध्यम से उनके काम हम सबके सामने हैं। नर्मदा समग्र का जो कार्यालय उन्होंने बनाया उसका नाम भी उन्होंने 'नदी का घर' रखा। वे अपने पूरे जीवन में हमें नदियों से, प्रकृति से, पहाड़ों से संवाद का तरीका सिखाते रहे। दुनिया भर में होने वाली पर्यावरण से संबंधित संगोष्ठियों और सम्मेलनों में वे भारत के एक अनिवार्य प्रतिनिधि थे। उनकी वाणी में भारत का आत्मविश्वास और सांस्कृतिक चेतना का निरंतर प्रवाह दिखता था। एक ऐसे समय में जब बाजारवाद हमारे सिर चढ़कर नाच रहा है, प्रकृत्ति और पर्यावरण के समक्ष रोज संकट बढ़ता जा रहा है, हमारी नदियां और जलस्रोत-मानव रचित संकटों से बदहाल हैं, अनिल जी की याद बहुत स्वाभाविक और मार्मिक हो उठती है। अनिल जी का स्पष्ट मत था कि - ''हम नदियों को गंदा करना छोड़ दें, यही बहुत बड़ी देशभक्ति है।'' आजादी के बाद से नदियों से पानी लाने के बारे में समाज और सरकारों ने जितना विचार और खर्च किया है उसका एक प्रतिशत भी नदी में पानी आने के तंत्र पर न सोचा गया है और नहीं खर्च किया गया है।

उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे निजी क्षति बताया था। यह एकदम वास्तविक है- क्योंकि दोनों के बीच मित्र भाव तभी से रहा है, दोनों ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे हैं। जब अनिल दवे जी नर्मदा यात्रा में जलमार्ग से अरब सागर के निकट पहुँचे थे तो एकाएक उनके फोन की घंटी बजी- उधर से आवाज आई 'अनिल जी, आपका स्वागत है।' यह फोन गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए नरेंद्र मोदी जी का था। वे अनिल जी के प्रबंधन कौशल्य के कायल थे। इसीलिए उनकी पुण्यतिथि पर पीएम उन्हें विशेष तौर पर याद करना नहीं भूलते है।

वह एक व्यक्ति के रूप में संपूर्ण थे। वे नैसर्गिक समाजनायक थे। उनके विराट व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनकी अंतिम इच्छा की इन पंक्तियों से लगाया जा सकता है:

1. संभव हो तो मेरा अंतिम संस्कार बाद्राभान में नर्मदा नदी महोत्सव वाले स्थान पर किया जाये।
2. उत्तर क्रिया के रूप में केवल वैदिक कर्म ही हो किसी भी प्रकार का दिखावा आडंबर न हो।
3. मेरी स्मृति में कोई भी स्मारक, प्रतियोगिता, पुरस्कार, प्रतिमा आदि न बनाई जाए।
4. जो मेरी स्मृति में कुछ करना चाहते हो वे वृक्षों को बोने व उन्हें सरंक्षित कर बड़ा करने का कार्य करें तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। और ऐसा करते हुए भी वे मेरे नाम का प्रयोग न करें।

यह सामान्य सांसारिक शख्स की वसीयत नहीं हो सकती है।अनिल जी वाकई एक युगपुरुष थे। हम भाग्यशाली है कि उनका प्रत्यक्ष सानिध्य जीवन के लंबे समय तक मिलता रहा है। ☐☐

लेखक - सामाजिक कार्यकर्ता एवं
मप्र जनअभियान परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष

मध्यप्रदेश पर्यावरण के पितामह

❑ संतोष शुक्ला

मध्यप्रदेश में पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वालों पर जब भी दृष्टि डाली जाएगी, स्व. श्री अनिल माधव दवे जी का नाम सदैव श्रद्धा से लिया जाएगा। नदी संरक्षण के लिये उनके द्वारा किये गये शुरुआती प्रयास ने नदियों के संरक्षण पर राष्ट्रीय स्तर पर ला खड़ा किया। ऐसा नहीं है, कि इसके पहले इस विषय में कार्य नहीं किये जा रहे थे।

उनके इन भागीरथ प्रयासों ने देश में आम आदमी का ध्यान नदियों की दुर्दशा की ओर खीचा। अभी तक यह चिंता गंगा और यमुना तक ही सीमित थी, इसका विस्तार गांव खेड़ों की छोटी-बड़ी नदियों तक हो गया। अब आम आदमी भी यह विचार करने लगा, कि वह स्वयं नदियों के लिये क्या कर सकता है, इसका प्रभाव बहुत ही सकारात्मक रहा। कई स्थानों पर युवाओं की टीम नदियों पर कार्य करने के लिये उत्साह से जुट गयी। उन्होंने मध्यप्रदेश ही नहीं, देश के नदियों पर काम करने वालों को विचार विमर्श करने साथ ही विभिन्न लोगों के द्वारा किये जा रहे कार्यों के अनुभव साझा करने के लिये इकठ्ठा किया, जो समाज के लिये प्रेरणादायी रहा। इस प्रयास ने पर्यावरण से संबंधित कार्यों और विचारों में एक तीव्रता की लहर पैदा कर दी।

स्व. श्री अनिल माधव दवे ऐसे राजनेता थे, जिनके भीतर आत्मा को जानने के ललक अंदर हिलोरे लेती थी। उन्हें जब भी समय मिलता, वे ध्यान आत्मासुसंधान के अभ्यास में लग जाते। दूर से जाननें वालों को लगता कि उनके अंदर राजनीति में पद और प्रतिष्ठा की कामना है। यह सच है, कि वे त्यागी साधू नहीं थे। उनका मन सदैव नर्मदा में ही रमता था। अपनी राजनीतिक सीमाओं में बंधे होने के बाबजूद भी वे हमेशा यह विचार करते रहते कि नर्मदा जी के लिये और क्या किया जा सकता है। नर्मदा जी के तटों या संबंध में उनसे मिलने आने वाले समाज के हर वर्ग के लोगों की राय सलाह वे ध्यान पूर्वक सुनते और अपने मन में चल रही योजना में आवश्यक सुधार और बदलाव करते चलते।

वे राजनीति क्षेत्र में उन्नति चाहते थे, क्योंकि उन्हें लगता था, शीर्ष पर बैठकर काफी कुछ बदलाव किये जा सकते हैं। उनकी भावना थी, कुछ ऐसे लोगों को राजनीति में उच्च पदों तक पहुँचाना चाहिए, जिनके भीतर धरती की भी चिन्ता हो। ईश्वर ने उन्हें अवसर भी दिया।

हम स्वयं भी जब किसी भी विशेष कार्य को करते है, पहले कार्य क्षेत्र का एक ब्यौरा अपने सामने रखकर योजना बनाते है। इसको ध्यान में रखकर अनिल जी ने सबसे पहले माँ नर्मदा को हवाई मार्ग से पूरा देखा, निरीक्षण किया इसके बाद उन्होंने अमरकंटक से भरुच तक नर्मदा जी की राफ्ट से साहसिक यात्रा की। इस यात्रा के दौरान जगह-जगह उन्होंने नर्मदा किनारे रहवासियों से बात की। नर्मदा के प्रति अपनी चिन्ता से लोगों को अवगत कराया, साथ ही लोगों की चिंन्ताओं से भी रुबरु हुए इस यात्रा ने नर्मदा के लिये किये जाने वाले कार्य की रुपरेखा स्पष्ट कर दी।

नदी किनारे के समाज, विभिन्न वर्ग समुदाय के लोगों से किये गये विचार-विमर्श आगे की कार्य योजना का आधार बने। यहां यह बात बताना आवश्यक होगा की अनिल जी हमेशा कहते थे, कि नर्मदा जी के लिये मै या कोई मनुष्य क्या करेगा, माई जो करा ले वही हो सकता है। हम कौन होते हैं, उसके लिये कुछ करने वाले। नर्मदा के किनारे के समाज, सामाजिक कार्यकर्ताओं, आम लोगों के साथ बात करने के बाद उन्होंने देश-विदेश के पर्यावरण विशेषज्ञों, कार्यकर्ताओं, समूहों से बात करने की योजना बनायी। जिससे उनकी अपनी कार्य योजना का विस्तार हो सके। यह प्रयास 2008 में अन्तर्राष्ट्रीय नदी महोत्सव के रुप में सबके सामने आया। नर्मदा जी की राफ्ट से यात्रा और नर्मदा के किनारे के समाज के साथ विचार विनिमय से अनिल जी के मन में एक कार्य योजना ने आकार तो ले ही लिया था। परंतु इस कार्य योजना को मुकम्मल बनाने के लिये उन्होंने देश और दुनिया के नदियों पर कार्य कर रहे लोगों विशेषज्ञों से भी विमर्श करने का मन बनाया, और इसकी शुरुआत हुयी 2008 में पहले अन्तर्राष्ट्रीय नदी महोत्सव के रुप में, अपने आप में अनूठे इस आयोजन का स्थान नर्मदा और तवा के संगम स्थल बान्द्राभान था।

नदी किनारे के समाज, विभिन्न वर्ग समुदाय के लोगों से किये गये विचार-विमर्श आगे की कार्य योजना का आधार बने। यहां यह बात बताना आवश्यक होगा की अनिल जी हमेशा कहते थे, कि नर्मदा जी के लिये मै या कोई मनुष्य क्या करेगा, माई जो करा ले वही हो सकता है। हम कौन होते हैं, उसके लिये कुछ करने वाले। नर्मदा के किनारे के समाज, सामाजिक कार्यकर्ताओं, आम लोगों के साथ बात करने के बाद उन्होंने देश-विदेश के पर्यावरण विशेषज्ञों, कार्यकर्ताओं, समूहों से बात करने की योजना बनायी। जिससे उनकी अपनी कार्य योजना का विस्तार हो सके।

मार्च 2008 में हुए इस आयोजन में सभी प्रतिभागियों के रुकने की व्यवस्था तट पर ही की गयी थी। इस कार्यक्रम में भारत के और विदेशों के 45/40 नदीं प्रेमीयों लोगों ने भागीदारी की। इस महोत्सव का विषय था ''नदी में जल कैसे बढ़े और प्रदूषण कैसे घटे'' इस कार्यक्रम में देश 577 और विदेश से16 देशों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। तीन दिन चले इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों के माध्यम से नदियों के सभी पहलुओं पर गहन विचार-विमर्श किया गया जो भविष्य की कार्ययोजना का आधार बना।

इसके बाद नदी महोत्सव का यह क्रम 2010, 2013, 2015 में जारी रहा। उनके असमय देहावसान के बाद सन् 2018 में नदी महोत्सव का आयोजन किया गया। इस आयोजन में अनिल जी टीम ने कोई कसर नहीं छोड़ी, सारी गतिविधियां ठीक उसी तरह आयोजित की गयी, जैसा अनिल जी करते थे। पूरे आयोजन के दौरान हर प्रतिभागी को अनिल जी की कमी खलती रही। इन महोत्सवों में देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित समाजसेवी, विषय विशेषज्ञ, पत्रकार आदि ने समय-समय पर भागीदारी की। उन सभी के सुझावों ने नदी संरक्षण के कार्यक्रम की दिशा और दशा में अमूल्य योगदान दिया।

सन् 2007-08 में स्व. श्री अनिल माधव दवे जी ने म.प्र. में ग्राम स्तर तक स्वयं सेवा के कार्यो को मूर्त रुप देने के लिये नव युवकों को एनजीओ गतिविधियों की ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) देने हेतु एक व्यापक अभियान के कार्य की शुरुआत की, जिसका नाम दिया गया ''जन अभियान परिषद''। इसमें ब्लाक स्तर से लेकर राज्य स्तर तक स्वयं सेवकों की एक फौज तैयार की गयी। इन कार्यकर्ताओं की विशेष ट्रेनिंग की रचना बनायी इस ट्रेनिंग को पंचमढ़ी में आयोजित किया गया। ट्रेनिंग के कंटेन्ट को बहुत ही शानदार तरीके से डिजाइन किया गया था। क्षेत्रों को छोड़ दे तो बहुत पिछड़ापन था, इन गतिविधियों के प्रति लोगो में जागरुकता और रुचि नहीं थी। इस अभियान से स्थानीय युवाओं में समाज सेवा और ग्राम विकास के प्रति जागरूकता बढ़ी। जन अभियान समाज और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य किया। अनिल जी ने अपने जीवन काल में ही नदी संरक्षण को समर्पित संस्था ''नर्मदा समग्र'' का गठन किया। यह संस्थान अपने संसाधनों के साथ आज भी नदीं संरक्षण के कार्य में लगा हुआ है। अमरकंटक से भरुच तक इसके कार्यकर्ता वर्ष भर लोगों के बीच रहकर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करते है, साथ हीं लोगों को नदी के प्रति जागरुक करते रहते है। □□

लेखक - वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद

बड़नगर की पावन धरा के लाल हमारे अनिल जी

❑ राजपाल सिंह राठौर

कभी-कभी कोई पुण्यात्मा साधारण मनुष्य जीवन में आती हैं और हजारों-हजार लोगों की प्रेरणा बनकर, उनके जीवन को मार्ग दिखाकर दिव्यलोक में प्रस्थान कर जाती है। ऐसे व्यक्ति विचार बन जाते हैं जो जाने के बाद भी हजारों लोगो के कृतित्व में झलकते हैं।

2017 में मई 18 का वह दिन जब सबकी तरह मुझे भी यह पता चला की हमारे अनिल जी दवे नही रहे तो सहसा विश्वास नहीं हुआ। यह एक ऐसी दुर्घटना थी जो आज भी मन को अन्दर तक यह अहसास करवाती है कि वे होते तो कुछ नया कर रहे होते, सैकड़ों लोगों को अपने हर दिन के जीवन में किसी न किसी रूप में प्रेरणा दे रहे होते। हम सबको इस नश्वर समाज को छोड़कर जाना ही हैं परन्तु जाने के बाद बहुत कम ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनका विचार उनके जाने के बाद भी जीवित रहता हैं। अनिल जी हमारे बीच आज भी हैं। उनका विचार हम सबको निरंतर प्रेरित करता है।

मुझे उनका सानिध्य मिला यह मेरा सौभाग्य है। उनके विचारों को उनसे सुनने, उनमें देखने का अवसर मुझे मिला है। वे भगिनी निवेदिता के विचारों से बहुत प्रभावित थे। हमें उन्होंने एक वाकया सुनाया था की 1903 में दक्षिण अफ्रीका से जब महात्मा गाँधी कलकत्ता एक कार्यक्रम में भाग लेने आये थे तो वे भगिनी निवेदिता से मिले। गाँधीजी ने भगिनी निवेदिता से भारत की स्वतंत्रता हेतु अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए कार्य करने की योजना बनाने हेतु विमर्श किया तो भगिनी निवेदिता ने गाँधीजी को साफ़ शब्दों में कह दिया की अंग्रेजों से आज़ादी माँगने पर नही मिलेगी उसे आपको छिनना होगा। भगिनी निवेदिता सत्य बोलने वाली व क्रांतिकारी विचारों वाली एक आयरिश महिला थी। गाँधीजी उस घटना के बाद भगिनी निवेदिता से खीज गए थे।

कई वर्षों पहले अनिल जी आयरलैंड आये थे तो उन्होंने मुझसे कहा की उन्हें भगिनी निवेदिता से सम्बंधित सभी स्थानों पर जाना है। आयरलैंड में राजस्थानी समुदाय के अध्यक्ष देवी सिंह जी बिदावत ने इच्छा व्यक्त की वे संग चलना चाहते हैं। फिर हम अगले दिन निकल पड़े उस महान आत्मा के जन्मस्थान को देखने जो एक बार भारत आई और फिर भारत की होकर रह गई। उत्तरी आयरलैंड का नगर डनगेनन, जहाँ भगिनी निवेदिता का जन्म हुआ था और उनका सन्यास से पहले का नाम था मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल।

उनके जन्मस्थान के घर पर अब एक रोजमर्रा की वस्तुओं को बेचने की दुकान संचालित होती है। हमने पुरे दिन वहाँ आसपास के क्षेत्र का भ्रमण किया।

डनगेनन नगर की सरकार ने नगर के संग्रहालय में एक छोटा-सा भाग भगिनी निवेदिता के द्वारा भारत में किये गये कार्यों पर बना रखा हैं। अनिल जी की प्रबल इच्छा थी की दार्जिलिंग का वह घर जहाँ उन्होंने अंतिम श्वास ली, वहाँ जैसा प्रेरक संग्रहालय हमने भगिनी निवेदिता के लिए बनाया है, वैसा ही कुछ उनके जन्मस्थान पर होना चाहिए और इसके लिए वे डनगेनन नगरीय प्रशासन से बात भी करना चाहते थे।

लौटते समय मैंने भगिनी निवेदिता के घर पर जो दुकान बनी है, वहाँ से एक डायरी खरीदी और आदरणीय अनिल जी को भेंट स्वरुप दी तो उन्होंने कहा की इसमें कुछ लिखकर तुम्हें वापस दूँगा।

पुनः डबलिन लौटते समय हम न्यूरी में रहने वाले एक भारतीय डॉक्टर के घर भोजन हेतु गये थे। बात-बात में डॉक्टर साहब ने कहा की हम यहाँ तो बस सेवा कर रहे हैं तो अनिल जी ने डॉक्टर से कहा था की अपने यहाँ के अच्छे डॉक्टर यदि विदेश सेवा करने आ जायेंगे तो अपने लोगों की सेवा कौन करेगा? डॉक्टर साहब निरुत्तर थे। रेरा (RERA) जैसा मुश्किल कानून उनके ही जैसे बेदाग व्यक्ति के मार्गदर्शन में बना सकता था।

शिवाजी महाराज के पौरुष का जीवंत चित्रण करने वाले जाणता राजा नाट्य को वे आयरलैंड में भी आयोजित करवाना चाहते थे। वहाँ चल रहे रामकृष्ण मिशन के स्वामी जी से अनिल जी स्वयं जा कर मिले। धर्म व संस्कृति के प्रति उनका ज्ञान अकल्पनीय था। कुछेक बार मुझे दिल्ली स्थित उनके आवास पर भी उनके संग रहने का सौभाग्य मिला। साधारण भोजन, साधारण रहन-सहन और उच्च कोटि का वैचारिक जीवन, मैं उनसे बहुत प्रभावित था। उनकी वाणी जितनी सौम्य थी विचारों में उतनी ही ज्यादा दृढ़ता थी।

मुझे उनका जितना सानिध्य मिला उसमें मैंने उनके व्यक्तित्व से जितना कुछ बटोर सकता था वह बटोर लिया। परन्तु जितना बटोर पाया वह उतना ही था जितना समुद्र को बटोरने निकला व्यक्ति जीवन भर समुद्र किनारे बिखरे हुए पत्थर बटोर पाता है। मैं समुद्र को तो छू भी नहीं पाया। एक दिन वे सोने जाने से पहले योग कर रहे थे, मैंने सहसा पूछ लिया की भाईसाब सोने से पहले योग क्यों? उन्होंने कहा की हम सोने को ज्यादा महत्व नहीं देते परन्तु यह हमारी दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग है। हम हर चीज की तैयारी करते हैं तो सोने की भी अच्छी तैयारी करनी चाहिए और फिर सोना चाहिए।

शुचिता की राजनीति के वे अप्रतीम उदहारण थे। हेडगेवार परंपरा के वे चमकते सितारे है। उनके हर कृतित्व में संघ रचा-बसा था। राजनीति को उन्होंने कुछ नया करके दिखाने का माध्यम बनाया। ऐसे प्रयास किये जिनसे सामान्य व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आ सके। वे समाज की पीढ़ा को समझते थे। माँ नर्मदा के किनारे बसने वाले कई गाँव ऐसे हैं जो हर मौसम में चलने वाली सड़क से जुड़े हुए नहीं हैं। ऐसे में उन गाँवों में उचित चिकित्सा उपचार रोगियों को नही मिल पाता है। उनमें संवेदना थी, उन्होंने नर्मदा जी में वाटर एम्बुलेंस (जल रोगी वाहन) चलाई जिससे दूर-सुदूर जनजाति क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सके। अभी कोरोना काल में अनिल जी द्वारा शुरू की गयी यह वाटर एम्बुलेंस कई लोगों का जीवन बचाने में सहायक सिद्ध हुई। बहुत कम लोगों को पता है की वे एक पायलट थे। उन्होंने नर्मदा जी के उद्गम से लेकर गंतव्य तक की यात्रा एक छोटे जहाज को स्वयं उड़ा कर पूरी की।कहते हैं की बड़नगर सदैव महान व्यक्तित्वों का सृजन करने वाली भूमि है। यहाँ की विचार परंपरा स्व से परे वयं के भाव से पोषित है और इसी विचार परंपरा को राष्ट्रीय स्तर पर अपने कर्मों द्वारा आदरणीय अनिल जी ने स्थापित करने का अतुलनीय प्रयास किया। बड़नगर का मान उन्होंने अपने आचरण व तपस्या से बढ़ाया हैं। उनकी पुण्यतिथि पर हमारी टोली ने बड़नगर विधानसभा के 55 गाँवों में एकसाथ पक्षियों के पीने हेतु पानी के पात्र अपने घरों की छत पर रखे थे। उनके बारे में जो भी लिखेगा वह उनके व्यक्तित्व का अंश मात्र ही छू सकता हैं क्योंकि उनका व्यक्तित्व विराट है, उनको बस गंभीर होकर महसूस किया जा सकता है। उनकी पूर्णता को शब्दों में परिलक्षित करना संभव नहीं है। उनके जैसा होना आसान नहीं, एक लम्बी तपस्या के बाद व्यक्ति के जीवन में ऐसा तेज आता है। वे शब्दों में निहित नही किये जा सकते। उनकी वैचारिक परंपरा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सबकी हैं। बड़नगर की पुण्य धरा पर आने वाली पीढियाँ उनके द्वारा स्थापित किये गये आदर्शों पर गौरवान्वित होती रहेगी और अनिल जी सदैव हमारे लिए प्रेरणापुंज बन कर हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगें। बड़नगरवासियों की और से उनके चरणों में विनम्र आदरांजलि प्रस्तुत करता हूँ। ☐☐

लेखक - पूर्व में साफ्टवेयर इंजीनियर
(आईबीएम),भारत सरकार की राष्ट्रीय युवा
सलाहकार समिति के सदस्य, यंग लीडर्स
कॉन्क्लेव मध्यप्रदेश के संयोजक

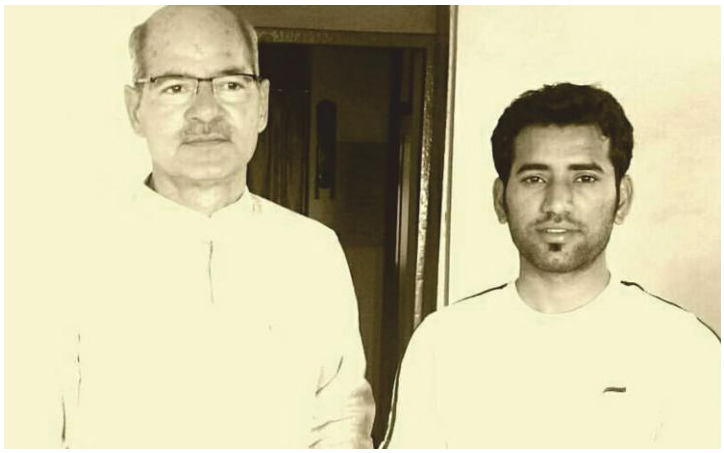

ओजोन परत, पर्यावरण और श्री दवे

❑ अजय झा

2009 में कोपनहेगन में जलवायु परिवर्तन की वैश्विक बैठक में उन्हें पर्यावरण के शिक्षार्थी के रूप में देखा। भारत का सफल नेतृत्व करने के बाद भारत आए तो श्री दवे जी ने अपने स्वभाव के अनुरूप सिर्फ इतना ही कहा "बातचीत कठिन थी" मध्यप्रदेश में वह नर्मदा समग्र के प्रणेता के अलावा जलवायु और पर्यावरण के गहन चिंतक की भूमिका में दिखाई दिए और सरकार के साथ मिलकर समस्या को समझने, समझाने और समाधान ढूँढने के कई अनूठे प्रयोग किए। इनमें सबसे बड़ा 2016 में सिंहस्थ के दौरान अंतर्राष्ट्रीय विचार महाकुंभ था।

16 सितम्बर को विश्व ओजोन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री अनिल दवे जी सहसा ही याद आ गए। ओाजन परत बचाने और भूमंडलीय जलवायु को और गर्म होने से रोकने की मुहिम में श्री दवे जी की महती भूमिका रही है। हम सब जानते है कि ओजोन परत पृथ्वी को सूर्य की पराबैगनी किरणों से बचाना है और पृथ्वी को गरम होने से भी बचाता है। पिछले सौ वर्षों में रेफ्रिजरेशन और शीतानुकूलन में कुछ ऐसे गैसों का इस्तेमाल हुआ जो ओजोन परत की क्षरण के लिए जिम्मेदार है। ओजोन परत के क्षरण को रोकने के लिए वैश्विक प्रयास के तहत मॉट्रियल प्रोटोकाल नाम की संधि 1987 में की गई। उसका उद्देश्य ओजोन परत में छेद करने वाले रसायनोध्अवयवों का प्रयोग खत्म करना है। माट्रियल प्रोटोकाल राष्ट्रसंघ के पर्यावरण कार्यक्रम के सर्वाधिक सफल प्रयासों में है। इस प्रयास से ओजोन परत का क्षरण रूक गया है और ऐसी आशा है कि सभी क्षेत्रों में यह ओजोन परत 2050-2060 तक ठीक या स्वस्थ हो जाएगी।

ओजोन परत के संरक्षण में रवांडा की राजधानी किगाली में हुए बैठक और उसके निष्कर्ष पर वैश्विक सहमति बनाने और खासकर विकासशील देशों और भारत का हित की रक्षा करने में श्री अनिल दवे की अद्वितीय भूमिका रही। श्री दवे ने भारत सरकार में वन और पर्यावरण मंत्री के रूप में इस बातचीत में भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया और न कि सिर्फ भारत बल्कि विकासशील देशों का पक्ष बलपूर्वक रख। इस बैठक का उद्देश्य हाइड्रो फ्लोरो कार्बन (HFC) का उपयोग खत्म करने के लिए एक वैश्विक करार बनाना था। HFC, HFC, या CFC जो कि ओजोन के लिए घातक है उसका विकल्प है। HFC का प्रयोग रेफ्रिजरेटर और वातानुकूलन यंत्रों में होता है और विकासशील देशों में भारी मात्रा में उपयोग किया जाता है। यद्यपि HFC ओजोन परत के लिए खतरा नहीं है, पर यह जलवायु संकट के लिए अत्यन्त खतरनाक है क्योंकि पृथ्वी को गरम करने की इसकी क्षमता कार्बन डाय ऑक्साइड के मुकाबले सौ से हजार गुना अधिक है। किगाली में यूरोपीय संघ, अमरीका और छोटे द्वीपीय देश (आइलैंड) चाहते थे कि 2019 से सभी के उपर HFC उपयोग पर प्रतिबंध लगाया जाए। दवे जी वे ने राजनैतिक कौशल और समझबूझ से एक ऐसा विकल्प

दिया जो विकासशील देशों के लिए बहुत हितकारक था। आखिर में हुए समझौते के तहत जहां विकसित देश HFC का प्रयोग 2019 में बंद करेंगे, चीन और कुछ विकासशील देशों को 2024 तक की मोहलत दी गई और विकसित देशों में भारत को चीन के साथ एक ही लकड़ी से हाँकने की इच्छा रहती है। लेकिन चीन और भारत की अर्थव्यवस्था, विकास की अवस्था और समाज बिल्कुल भिन्न है और चीन के साथ हाँके जाने से भारत को ऐसी परिस्थितियों में ज्यादातर घाटा ही होता है। लेकिन किगाली में श्री दवे का राजनीतिक कौशल, वाक्पटुता और वाणी में मधुरता या आवश्यकता पड़ने पर कड़ा रूख अपनाने की सहजता से भारत के वातानुकूलन उद्योग को HFC खत्म करने के लिए पर्याप्त समय और आर्थिक सहयोग और देश को विकल्प ढूंढने में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए काफी समय दिया। किगाली संशोधन लागू होने से न सिफ जलवायु परिवर्तन की गति कम होगी बल्कि खाद्यान का एक तिहाई हिस्सा जो बर्बाद होता है उसे भी शीतानुकूलन से बचाया जा सकेगा।

दुनिया धनी देशों के साथ प्रतिदंद्विता में भारत का सफल नेतृत्व करने के बाद भारत आए तो श्री दवे जी ने अपने स्वभाव के अनुरूप सिर्फ इतना ही कहा ''बातचीत कठिन थी'' उनके कुशल नेतृत्व के लिए राष्ट्रसंघ के पर्यावरण कार्यक्रम ने 2017 में श्री दवे जी को मरणोपरान्त ओजोन अवार्ड से भी सम्मानित किया। भारत सहित कुछ और देशों को HFC उपयोग करने के लिए 2028 तक का समय दिया जिसके बाद उनको HFC का उपयोग क्रमशः घटाना होगा और 2048 तक इसका उपयोग ख़त्म करना होगा।

मेरा दवे जी से संक्षित परिचय पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के माध्यम से रहा। 2009 में कोपनहेगन में जलवायु परिवर्तन की वैश्विक बैठक में उन्हें पर्यावरण के शिक्षार्थी के रूप में देखा। हमारी जलवायु संकट और उसके समाधान पर तकरीबन अराजनैतिक बातचीत में वह हमेशा देश की हितों की रक्षा से जोड़ने और बातचीत को नया पहलू देते। जलवायु परिवर्तन पर कुछ और अवसर मिले उनसे बातचीत और उनके साथ यात्रा करने के और हमेशा देश का हित उनकी बातचीत में सर्वोपरि पाया। इस बीच उन्होंने भारतीय जनता पार्टी में पर्यावरण प्रकोष्ठ बनाकर यह चर्चा और व्यापक की। अपने गृह राज्य मध्यप्रदेश में वह नर्मदा समग्र के प्रणेता के अलावा जलवायु और पर्यावरण के गहन चिंतक की भूमिका में दिखाई दिए और सरकार के साथ मिलकर समस्या को समझने, समझाने और समाधान ढूँढने के कई अनूठे प्रयोग किए। इनमें सबसे बड़ा 2016 में सिंहस्थ के दौरान अंतर्राष्ट्रीय विचार महाकुंभ था। इस तीन दिवसीय विचार महाकुंभ में कई गणमान्य अतिथियों और चिंतकों सहित 5000 लोगों ने हिस्सा लिया जिनमें 300 विदेशी चिंतक और विद्वान भी थे। समापन बैठक को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और श्रीलंका के राष्ट्रपति ने भी अपनी उपस्थिति से सुशोभित किया और विचार कुंभ का सार्वभौमिक संदेश का विमोचन किया। इस सार्वभौमिक संदेश के 51 बिन्दु पर किए गए कुछ कार्य मध्यप्रदेश में पर्यावरण पर हुए कुछ अच्छे कार्यों में सर्वदा याद रहेंगे। इस विचार कुंभ का सफल आयोजन सिर्फ दवे जी के अथक प्रयास और कुशल नेतृत्व से ही संभव था।

श्री दवे जी का पर्यावरण मंत्रालय में कार्यकाल संक्षिप्त रहा। नदी जोड़ योजना, पर्यावरण, नदियों, जंगल आदि पर काफी साहसिक काम करने की इच्छा ने उन्हें सभी राजनैतिक दलों के बीच अच्छा मंशा के मंत्री के रूप में स्थापित किया। इनमें से कई कार्यों की परिणति देखने का समय उन्हें अकाल मृत्यु ने नहीं दिया। वह अपने पीछे अच्छे और संवेदनशील नेता और पर्यावरणविद की विरासत छोड़ गए। नर्मदा समग्र को उनकी स्मृति और उनके आदर्शों को जीवंत रखने के लिए बहुत साधुवाद। ☐☐

लेखक - जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ, निदेशक
पब्लिक एडवोकेसी इनिशिएटिव्स फॉर राइट्स
एंड वेल्यूज इन इंडिया, नई दिल्ली

नर्मदा अंचल के वृक्ष - अंजन

INDIAN BLACK WOOD

Hardwickia binata केसिया उपकुल - Caesalpinioideae

❑ डॉ. सुदेश वाघमारे

स्वभाव - मजबूत देशज वृक्ष जो अनुकूल वातावरण मिलने पर 40 मीटर ऊंचाई तक जाता है, शाखाएं नीचे की ओर झुकी होती हैं।

प्राकृतवास - रेतीली भूमि और पृथ्वी के अंदर रेतीली चट्टानों पर बहुत अच्छी वृद्धि करता है, सतपुड़ा और निमाड़ के जंगलों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है।

विवरण - छालः नए वृक्षों में भूरी परन्तु पुरानों में काली और खड़ी दरारों वाली।

पत्तियाँः संयुक्त, एकांतर पत्तियाँ जिनमें दो वृंतहीन किडनी के सामन पूर्णक आधार पर जुड़े रहते हैं, पत्तियाँ शुरूआत में लाल फिर हलकी हरी और अंततः गहरी हरी हो जाती है, पत्तियों का यह रूप परिवर्तन देखना बहुत आकर्षक होता है।

फूलः बहुत छोटे, पीतहरित, लगभग अगोचर और अनाकर्षक, दलपुंज 0, पुंकेसर 10, एक छोटा और एक बड़ा, पुष्पन वर्षा और शीत ऋतु में परन्तु सामान्य रूप से दृष्टिगत नहीं होता।

फलः 5 से 10 सेमी लम्बे कत्थई रंग के, चपटे तथा दोनों सिरों पर संकरे, फली पर स्पष्ट सामानंतर नाड़ियाँ, एकबीजी, बीज प्राय फली के अंत में।

उपयोगः लोहे के समान कठोर इमारती लकड़ी, कृषि उपकरणों और रेलवे स्लीपर के लिए ज्यादा उपयोगी था जो अब लगभग बंद हो गया है। सर्वोत्तम जलाऊ लकड़ियों में से एक क्योंकि हाई क्लोरिफिक वैल्यू होती है। पत्तियाँ उत्तम पशु चारा, दाल से रस्सी बनाई जाती है।

- उपयोगी विशेषकर स्त्री रोगों और पुष्टिवर्धन में।
- ओलेओरेसिन एवं वाष्पशील तेल।
- खतरे की नजदीक
- चार इमली नंदन कानन से पूर्व दिशा में आई.आई.एफ.एम., कैम्पस।

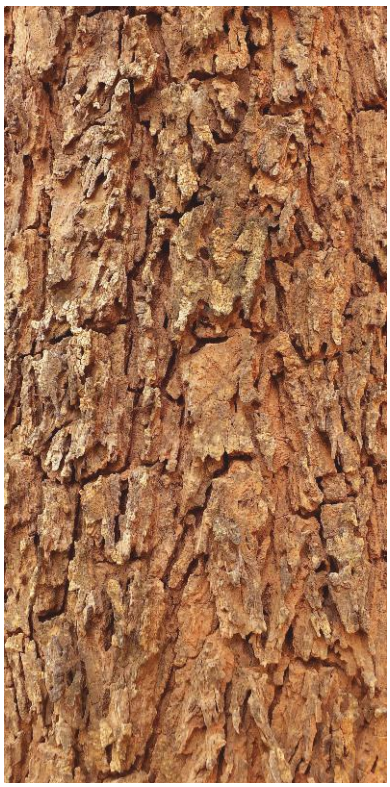

सतुपड़ा के जंगलों में इसके बलिष्ठ ढ़ैर लम्बे पेड़ देखे जा सकते हैं। मध्यप्रदेश के निमाड़ से गुजरने पर अंजन एक ऊँचे ठूंठ के रूप में दिखाई देता है, क्योंकि इसकी पत्तियां राजस्थान के ऊँट और भेड़ों को सर्वाधिक प्रिय हैं, सतपुड़ा के जंगलों से अंजन नाम की नर्मदा की सहायक नदी भी निकलती है। रामायण के अशोक वन में जिन पेड़ों का वर्णन आया है, अंजन भी उनमें से एक है।

सतुपड़ा की जनजातियां ऐसा मानती हैं कि जितना यह जमीन से ऊपर दिखाई देता है उतना ही जमीन के नीचे भी रहता है। एक साल में इसकी मूसला जड़ तीन मीटर से भी अधिक गहरी चली जाती है। इसकी सुंदरता अप्रैल मई में तब देखने लायक होती है जब इसमें गुलाबी पत्तियाँ आती हैं, इसकी पत्तियों को देखकर अस्ता (ठंीपदपं तमबमउवें) तथा जंगल जलेबी के पेड़ का भ्रम होता है। अंजन का वानस्पतिक नाम ईस्ट इंडिया कंपनी के मेजर जनरल थॉमस हार्डविक के नाम पर हार्डविकिया और पत्तियाँ दो भाग में बंटे होने के कारण ''बाईनाटा'' रखा गया है। ❑ ❑

श्रद्धेय अनिल माधव दवे जी की पुण्यतिथि (18 मई 2021) - नर्मदा समग्र संकल्प दिवस के अवसर पर नर्मदा समग्र न्यासियों, नदी अनुरागियों एवं कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर पौधारोपण किया। कुछ झलकियाँ ...

महाकौशल भाग

संकल्प दिवस 'एक घर एक पौधा'

♦ विनोद शर्मा, ष्ट्च्य पटवा एवं टीम पौधारोपण सामूहिक जबलपुर

♦ अर्पित कटारे सामूहिक पौधारोपण साईंखेड़ा जिला नरसिंहपुर

♦ नीलेश कटारे पौधारोपण रपटा घाट जिला मण्डला

♦ सुधीरदत्त तिवारी पौधारोपण शंकर घाट डिंडोरी

♦ देवेंद्र पांडे पौधारोपण बस स्टैंड घाट डिंडोरी

नर्मदापुरम भाग

संकल्प दिवस 'एक घर एक पौधा'

♦ बृज मोहन जी यादव ग्राम वासुदेव विकासखंड नसरुल्लागंज जिला सीहोर

♦ उत्तम सिंह राजपूत, चेतन सिंह राजपूत, शील कंठ

मालवा-निमाड़ भाग

संकल्प दिवस 'एक घर एक पौधा'

♦ श्री रूमा पिता नान सिंह पौधा-आम ग्राम ककराना तहसील, सोंडवा जिला अलीराजपुर

♦ संकल्प दिवस पौध संख्या 21, आम, पीपल, बढ़, निम , स्थान रेवा सेवा अन्नक्षेत्र घाट टीम नर्मदा समग्र वराहनगर बड़दा तह.मनावर जिला धार

♦ मनोज जोशी जी टीम नर्मदा समग्र परिक्र मा मार्ग अमलाथा, हनुमान जी मंदिर, सियाराम घाट

♦ श्री राम सिंह पिता बुर सिंह पौधा-आम ग्राम ककराना तहसील , सोंडवा जिला अलीराजपुर

♦ संकल्प दिवस पौध संख्या 21, आम, पीपल, बढ़, निम , स्थान रेवा सेवा अन्नक्षेत्र घाट टीम नर्मदा समग्र वराहनगर बड़दा तह.मनावर जिला धार

♦ श्री लोहार पौधा- आम ग्राम ककराना तहसील , सोंडवा जिला अलीराजपुर

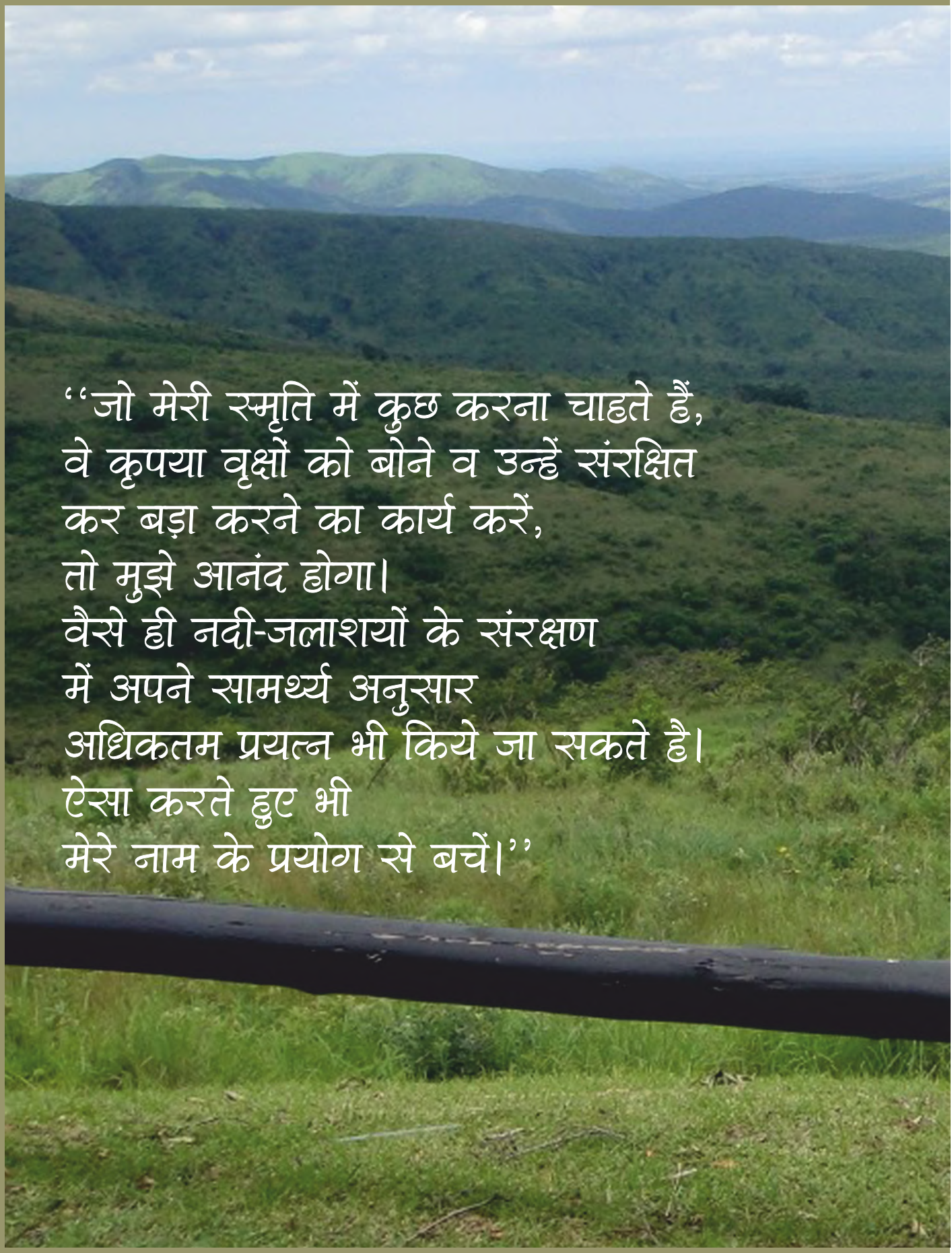
"जो मेरी स्मृति में कुछ करना चाहते हैं,
वे कृपया वृक्षों को बोने व उन्हें संरक्षित
कर बड़ा करने का कार्य करें,
तो मुझे आनंद होगा।
वैसे ही नदी-जलाशयों के संरक्षण
में अपने सामर्थ्य अनुसार
अधिकतम प्रयत्न भी किये जा सकते है।
ऐसा करते हुए भी
मेरे नाम के प्रयोग से बचें।"

नदी अनुरागी, नदी महोत्सव 2015 आयोजन समिति सदस्य श्री सुनील देशपांडे जी हमारे बीच नहीं रहे। वह राष्ट्रीय कारीगर पंचायत के प्रमुख और संपूर्ण बांबू केंद्र के अध्यक्ष थे। उन्होंने अपना जीवन बांस के क्षेत्र में समर्पित कर दिया था। बांस उत्थान व आजीविका के क्षेत्र में उनकी महती भूमिका रही। श्रद्धेय सुनील देशपांडे जी को नर्मदा समग्र परिवार की ओर से सादर नमन व श्रद्धांजलि।

पुण्य स्मरण

♦ नदी अनुरागी, नर्मदा समग्र के शुभ चिंतक व भाजपा के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विजेश लुनावत जी हमारे बीच नहीं रहे, जो कि कल्पना से परे है। हमेशा नर्मदा समग्र के कार्यों को प्राथमिकता देना, कार्यकर्ताओं के बारे में व संस्था की गतिविधियों की जानकारी लेते रहना, 'नदी के घर' की चिंता करना। कार्यकर्ताओं से बड़ी सहजता, सरलता और स्वाभाविकता से मिलना। नदी महोत्सव हो या नर्मदा समग्र के अन्य कोई कार्यक्रम उनकी सहभागिता, मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन सदैव संस्था को आत्मीय रूप से मिलता रहा। उनका देहावसान हम सभी के लिए अपूरणीय क्षति है। स्व. विजेश लूनावत जी को नर्मदा समग्र परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजली, शत् शत् नमन।

मैकल पर्वत श्रृखंला देश का सबसे पुराना अरण्यक

❑ संजय प्यासी

शहडोल संभाग में स्थित वनों का रेफरेंस रामायण काल से लेकर महाभारत काल तक में मिलता है।दुनिया के सबसे सघन और सुंदर वन क्षेत्र हज़ारों सालों से यहां रहे हैं। यहां विंध्याचल और सतपुड़ा के बीच स्थित मैकल पर्वत है जो अपनी अनूठी जैवविविधता और अरण्यक संस्कृति की वजह से प्रसिद्ध है। यहां की प्राचीनतम गुफाओं में स्थित शैलचित्रों से ये मालूम होता है कि नर्मदा घाटी में मानव सभ्यता के जो सबसे पुराने पूर्वज रहे हैं वो इस इलाके में भी रहते आए हैं।

मैकल पर्वत स्थित जंगल सदाबहार है जिसमें दर्जनों सदानीरा नदी नाले बहते हैं जो अंततः जाकर सोन या नर्मदा में मिलते हैं।शहडोल संभाग का यह एक बड़ा जलग्रहण क्षेत्र है जिससे इकट्ठा पानी उद्गम से होते हुए बाँधवगढ़ से लेकर पटना तक लोगो को जीवन देता है। मैकल क्षेत्र में देश के प्राचीनतम आदिवासियों में से एक बैगा जनजाति मुख्य रूप से निवास करती है। ये प्रकृति के सबसे बड़े जानकर और प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर जीने वाले लोग हैं। प्राचीनकाल से ही ये माना जाता है कि जिस जंगल में साल वृक्ष,बाघ और बैगा रहते हों वह जंगल सबसे समृद्ध जंगल होता है। संयोग से ये तीनो प्रमुख सूचक हमारे इसी मैकल क्षेत्र में सदियों से विद्यमान हैं।

बाँधवगढ़ से घुनघुटी, घुनघुटी से किरर और किरर से अमरकंटक स्थित मैकल पर्वत शृंखला में देश की सबसे पुरानी अरण्यक संस्कृति के पदचिन्ह मिलते हैं। यहां सनातन काल से ऋषि मुनि तपस्या के लिए भी आते रहे हैं। यहां अनेक उद्गम, उत्श्रुत कूप, झरने कुएं और तालाब हैं जिनमें वर्ष भर शुद्ध प्राकृतिक जल बहता रहता है। सदाबहार वन और सालभर बहते हुए पानी की वजह से यहां बाघ, तेंदुए, भालू, लकड़बग्घा चिंकारा, चीतल, भेड़की, कृष्णमृग ट्री श्रु आदि मिलते रहे हैं। यही इलाका बाँधवगढ़ से कान्हा, अचानकमार और घासीदास नेशनल पार्क के बीच का कॉरिडोर भी है। इसी इलाके में दुर्लभ उड़न गिलहरी और बड़ी लाल गिलहरी का बसेरा है जो अमूमन वहीं अपना घर बनाती है जहां 100 वर्ष से ज्यादा पुराने और ऊंचे वृक्ष सघन रूप से लगे हों।इन गिलहरियों की बस्तियां अब अत्यंत कम बची हैं जिनको हर हाल में बचाया जाना जरूरी है।

मकड़ी की एक ख़ास प्रजाति tarantula भी यहां मिलती है जो इस बात का संकेत है कि जंगल का कुछ हिस्सा अभी भी अपने मूल स्वरूप में बचा हुआ है यहां पर 300 से अधिक प्रकार के पक्षी रहते हैं जिनमें सुरखाब, दूधराज, बुलालचश्म, बड़ा धनेश, शमा, जंगली उल्लू आदि प्रमुख हैं। यहां तितली की भी 100 से अधिक प्रजातियां यहाँ रिकार्डेड हैं जिनमें ब्लू मॉरमॉन, कॉमन मैपविंग, बैंडेड पीकॉक, स्लेट फ्लैश, ओकब्ल्यू, क्रिमसन रोज आदि दुर्लभ प्रजातियां शामिल है।

मध्यप्रदेश के संकटापन्न वृक्ष प्रजातियों में लगभग 3 चौथाई प्रजातियां यहां मिलती हैं। जिनमें दहिमन, रोहिना, बीजा, कुल्लू, मेदा, तिनसा,धवा, गधा पलाश, सोनपाठा, हल्दू, अचार, शल्यकर्णी, जंगली शीशम आदि शामिल हैं। यहां की नदियों के किनारे अर्जुन के वृक्ष सघन रूप से लगे हैं जो प्राकृतिक रूप से पानी को शुद्ध बनाते हैं और मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। इसी पर्वत से दर्जनों सुंदर झरने बहते हैं। यह इलाका अध्ययन, और अरण्यक जीवन शैली को समझने के लिए एक प्राकृतिक विश्विद्यालय है।

विकास के अत्याधुनिक मॉडल और दूरदर्शिता के अभाव की वजह से इस इलाके में प्रकृति का अंधाधुंध शोषण जारी है।जिसमें अवैध उत्खनन, अतिक्रमण, प्लास्टिक के अपशिष्टों का निपटान,वनों की अवैध कटाई, प्रशाशनिक अमलों की उदासीनता बड़ी वजहें हैं। इन इलाकों में अतिशीघ्र अवैध उत्खनन और अंधाधुंध कटाई को रोकना होगा अन्यथा ऐसी हज़ारों साल पुरानी दुर्लभ जैवविविधता और अरण्यक संस्कृति को अरबों रुपये ख़र्च करके भी दुबारा पैदा नही किया जा सकेगा।

यहां पर विकास के वैकल्पिक और दूरदर्शी मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है जिसमें जैवविविधता का संरक्षण और विस्तार शामिल हो साथ ही आदिवासियों को उनके मूल स्वरूप में बने रहने देते हुए भी उनकी आजीविका की व्यवथा हो। इस इलाके को जंगलों एवं आदिवासियों के अध्ययन के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए और सस्टेनेबल टूरिज्म की अपार संभावनाओं को विस्तार दिया जाना चाहिए। एक विशेषज्ञों की टीम बनाकर इस काम को अंजाम दिया जा सकता है।वन समितियां और ग्राम समितियां इस संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।❑❑

लेखक - पर्यावरणविद

मनुष्य एक सामाजिक एवं विवेकशील प्राणी है। उसने जन्म से मृत्यु तक पानी के महत्व को समझा है। फिर उससे यह भूल कैसे हो गयी? सभी धर्म एवं सम्प्रदाय ने यही बताया है कि प्यासे को पानी पिलाना सबसे बड़ा धर्म है तो फिर अचानक विगत 10-15 वर्षों में ऐसा क्या हुआ कि पानी का व्यवसाय प्रारम्भ हो गया। यहाँ तक कि हमारी सरकार ने भी पानी बेचना प्रारम्भ कर दिया जैसे रेल नीर आदि।

जलाधिकार : एक यात्रा

❑ कैलाश गोदुका

माँ एक दिन समाचार पत्र पढ़ रहा था, पढ़ते-पढ़ते स्तब्ध रह गया। लियाा था, एक प्रौढ़ व्यक्ति रात में निद्रा में घर से निकला, प्रातः तक घर नहीं पहुंचा, परिवारजनों ने जगह-जगह तलाश किया, थक हारकर पुलिस में रिर्पोट दर्ज करायी। दो दिन बाद पुलिस थाने से फोन आया कि एक मृत शरीर प्राप्त हुआ है, आकर पहचान कर लीजिए। परिजन वहां गये तो पता लगा वो शरीर परिवार के उन्हीं सदस्य का था जिनकी तलाश हो रही थी। पोस्टमार्टम हुआ, रिपोर्ट आयी तो पता लगा कि इस व्यक्ति की मृत्यु पानी ना पीने से हुई है। मन में अनेक सवाल पैदा हो गये। देश की राजधानी एक व्यक्ति को पानी तक नहीं पिला सकी। सोचने को मजबूर हुआ कि यह कैसे हुआ। कारण समझ में आया कि आज तो पानी बिकता है। कोई भी व्यक्ति बिना पैसे के पानी कैसे पिला सकता है। सरकार ने योजनाबद्ध तरीके से सभी सार्वजनिक स्थानों से प्याऊ, नल, हैण्ड पम्प आदि सभी हटा दिये हैं। यह एक भयावह दृश्य था जिसने मन में अनेक सवाल पैदा कर दिये।

अब चर्चा प्रारम्भ होती है। मनुष्य एक सामाजिक एवं विवेकशील प्राणी है। उसने जन्म से मृत्यु तक पानी के महत्व को समझा है। फिर उससे यह भूल कैसे हो गयी? सभी धर्म एवं सम्प्रदाय ने यही बताया है कि प्यासे को पानी पिलाना सबसे बड़ा धर्म है तो फिर अचानक विगत 10-15 वर्षों में ऐसा क्या हुआ कि पानी का व्यवसाय प्रारम्भ हो गया। यहाँ तक कि हमारी सरकार ने भी पानी बेचना प्रारम्भ कर दिया जैसे रेल नीर आदि। अब बैठकों का क्रम प्रारम्भ होता है। प्रारम्भ में कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता कि पानी निःशुल्क मिलना चाहिए। इसके पीछे सभी का एक ही तर्क है कि कोई भी चीज बिना पैसों के मुफ्त में कैसे दी जा सकती है। इसको साफ करने पर, इसका घर तक पहुंचाने में बहुत सारा व्यय आता है वो सब कहाँ से आयेगा। फिर पीने योग्य पानी का तो नितान्त अभाव है, लोग इसे व्यर्थ में बर्बाद करते हैं आदि आदि। लगातार हो रही बैठकों में से कुछ प्रश्न हमारे सामने आये जिनका हमने गहन चिंतन किया जैसे-

1. क्या पानी वस्तु है? सभी का एकमत था कि पानी वस्तु नहीं अपितु जीवन तत्व है। यदि पानी जीवन तत्व है तो क्या जीवन तत्व का व्यवसाय हो सकता है? जहाँ पर भी सभी ने एक स्वर में कहा कि जीवन तत्व का व्यवसाय नहीं किया जा सकता।
2. क्या पानी का अभाव है? नहीं। जिस पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा पानी से है वहाँ पर पानी का अभाव कैसे हो सकता है। कदापि नहीं।
3. क्या पानी का निर्माण किया जा सकता है? नहीं। जब पानी का निर्माण नहीं किया जा सकता तो फिर जो सरकार, कम्पनी या संस्थायें पानी बेच रही है वो किस अधिकार से पानी बेच रही है। आखिर किसी भी वस्तु को हमें बेचने का अधिकार तभी प्राप्त होता है जब हम उसका निर्माण कर सकते हैं। यदि हम निर्माण नहीं कर सकते तो फिर बेचने का अधिकार कैसे हो सकता है। सबका एकमत था जिसका निर्माण नहीं कर सकते उसका व्यवसाय नहीं हो सकता।
4. तो फिर पानी का मालिक कौन? स्पष्ट रूप से ध्यान में आता है कि जिसने पानी का निर्माण किया वहीं पानी का मालिक हो सकता है। अर्थात प्रकृति अर्थात पृथ्वी, जल, वायु अग्नि एवं आकाश। इन पाँचों तत्वों से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है और प्रकृति में इन पाँचों तत्वों की उपलब्धता प्रचूर मात्रा में है। इन पाँचों तत्वों को हमें उसी प्रारूप में ग्रहण करना होता है जिस प्रारूप में हमें प्रकृति ने दिया है।
5. पानी का मालिक प्रकृति है तो फिर सरकार क्या है? सरकार एक न्यासी है। यहाँ पर हमें न्यासी को समझना होगा। न्यासी अर्थात् ट्रस्टी। न्यासी का कार्य होता है जिस उद्देश्य के लिये न्यास का गठन हुआ है उसे प्राप्त करना। प्रकृति ने पानी बनाया। किसके लिये, तो ध्यान में आता है, प्राणीमात्र के लिये। अर्थात प्रकृति ने अपने संविधान में यह व्यवस्था दी कि यह तो पानी है यह प्राणी मात्र के लिये है और मेरे बाद प्राणी मात्र ही इसके अधिकारी होंगे अर्थात मालिक। अतः जिस जनता ने अपने लिये जिस सरकार का गठन किया है उसका प्रथम दायित्व है कि प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए एक न्यासी के रूप में प्राणी मात्र को पीने योग्य पानी मिले, उसको उपलब्ध कराना।
6. संविधान क्या कहता है? हमारे संविधान के आर्टिकल 21 ''जीवन के अधिकार'' में भी यह स्पष्ट होता है कि सरकार को प्राणी मात्र के लिए पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। न्यायपालिका के भी अनेक फैसले इस बात की पुष्टि करते हैं।
7. अभाव पानी का है या प्रबंधन का? जब तीन-चौथाई धरती पर पानी है तो यह तो स्पष्ट ही है कि पानी का अभाव नहीं है। तो फिर क्या है? स्पष्ट रूप से ध्यान में आता है

कि अभाव प्रबंधन का है। पहले पानी के संरक्षण हेतु कुएँ, तालाब, बावली आदि होते थे जो वर्षा के जल का संरक्षण प्राकृतिक तरीके से करते थे। परन्तु आज अंधाधुंध औद्योगिकरण व व्यावसायिकरण के कारण इन सबको समाप्त प्रायः कर दिया गया है जिसके कारण वर्षा का जल बहकर वापस समुद्र में चला जाता है। अतः जल संचयन एवं संरक्षण के पारंपरिक तरीकों को पुनः जीवित करना होगा। जिससे पानी का जो अभाव हुआ है वो पूरा हो सके।

8. क्या पेड़-पौधे, पशु-पक्षी पानी खरीद सकते हैं? अन्त में इस विषय पर भी चर्चा हुई कि चलो यह मान लेते हैं कि मनुष्य तो पानी खरीद लेगा, परन्तु क्या पेड़-पौधे, पशु-पक्षी खरीद सकते हैं? तो सभी ने कहा कि नहीं। यदि नहीं तो क्या इनका जीवन सुरक्षित रह पायेगा? नहीं। तो क्या इनके बिना जो हमें प्राणदायी ऑक्सीजन व अन्य महत्वपूर्ण चीजें प्रदान करते हैं, मनुष्य जीवित रह पायेगा? नहीं। तो फिर मनुष्य का पानी व्यवसाय करके क्या प्राप्त करना चाहता है?

अब तक यह बात सबको समझ आ गया थी। सभी साथियों ने इसके साथ ही मिलकर यह तय किया कि हम ''जलाधिकार'' के तहत पानी के व्यवसायीकरण व नीजिकरण के खिलाफ लड़ेंगे तथा सरकार को इस बात के लिए बाध्य करेंगे कि वो अपने मूलभूत दायित्व का निर्वाह करते हुए नियमानुसार प्राणी मात्र को स्वच्छ, साफ व पीने योगय पानी निःशुल्क उपलब्ध करायें।

''जलाधिकार'' की यह यात्रा वर्ष 2012 से प्रारम्भ हुयी जो दिन-प्रतिदिन तेज और तेज गति से बढ़ती जा रही है। इसके तहत हमने अनेक प्रकार के कार्यक्रम जिसमें सेमिनार, वाद-विवाद प्रतियोगिता, समूह में चर्चा, नुक्कड़ नाटक, पद यात्रायें, विचार गोष्ठियाँ, चित्रकला प्रतियोगिता, जल उपवास, जल अदालतें आदि का सम्पूर्ण देश में, समाज के विभिन्न वर्गों के साथ जैसे महाविद्यालयों के छात्र, प्राध्यापक, आर.डब्ल्यू.ए. के निवासी, अधिवक्ता वर्ग आदि के साथ किया।

वर्तमान में हमारा एक अति महत्व का कार्यक्रम जो दिल्ली एवं दिल्ली एनसीआर में चल रहा है जिसका नाम है ''मेरा पानी मेरा पोस्टकार्ड'' इस कार्यक्रम में अब तक 125 स्कूलों के माध्यम से लगभग 150000 विद्यार्थी एवं अध्यापकों से संपर्क किया जा चुका है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक विद्यार्थी को एक पोस्टकार्ड व एक पत्रक दिया जाता है जिसमें छः प्रश्न है उनके उत्तर विद्यार्थियों को अपने माता-पिता से लिखवाकर ''जलाधिकार'' को भेजना होता है। इनमें से अभी तक 15000 पोस्टाकर्ड पर हमें अपने सवालों का जवाब प्राप्त हो चुका है।

उपलब्धियाँ:

1. जलाधिकार के प्रयत्न से फरह जिला मथुरा में जोधपुर झाल वर्तमान नाम दीनदयाल सरोवर का निर्माण।
2. कालिन्दी कन्या महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में प्लास्टिक बोतलों में पानी बेचने पर पूर्ण प्रतिबंध।
3. द्वारका-दिल्ली में स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर दो तालाबों के निर्माण में सहयोग।
4. आगरा में पार्क माइनर नहर की खुदाई करवाना। रोकने पर पी.आई.एल. दाखिल करना।
5. वर्तमान में दिल्ली, आगरा, हापुड़, रांची, मुंबई, कोलकत्ता, भुवनेश्वर आदि शहरों में विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन। □□

लेखक - संगठन मंत्री, जलाधिकार,
सामाजिक कार्यकर्ता एवं सीए

पश्चिमी देशों की कथनी और करनी में अन्तर

❑ डॉ. सुदेश वाघमारे

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे।।

अवधी की बजाएं खड़ी बोली में कहें, तो इसका अर्थ है कि उपदेश देनें वाले बहुत से लोग होते हैं, परंतु आचरण में उतारने वाले बहुत ही कम पाये जाते है। ये बात विशेष कर पर्यावरण चेतना पर शत-प्रतिशत लागू होती है। आज पूरे विश्व में पर्यावरण की चिंता करना नवीनतम फैशन है किंतु उसको अपने आचरण में उतरने वाले दुर्लभ है।

आपको जान कर आश्चर्य होगा कि प्रतिवर्ष लगभग 3 हजार करोड़ कार्बनडाई ऑक्साइड औद्योगिक प्रदूषण के कारण उत्पन्न होती है। इस पृथ्वी ग्रह पर ऐसी कोई संरचना नहीं है, जो कार्बनडाई ऑक्साइड को अवशोषित कर सके, इसलिए ये वायु मंडल में प्रवेश कर जाती है। दुनिया की लगभग 150 करोड़ आबादी जो महानगरों में निवास करती है फेफड़ों और श्वास की विभिन्न बीमारियों से संक्रमित हो रहीं है। इनमें सबसे अधिक संख्यां उन स्कूल के बच्चों की है, जो घर से बाहर प्रतिदिन विद्यालय में जाते हैं आकर वहां खुले स्थानों में पढ़ाई करते हैं।

ये तथ्य वायु प्रदुषण के एक छोटे से रूप को ही दर्शाता है जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण, आदि अनगिनत रूप है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन को प्रभावित कर रहें है। आगामी वर्षों में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 7 डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है। जिससे समुद्र तट पर बसे हुए महानगर जलमग्न हो जाएंगे। ग्लेशियर पिघल जाएंगें और समुद्र का जलस्तर असामान्य रूप से परिवर्तित हो जाएगा। वर्षा कब और कहां होगी इसकी भविष्यवाणी करने में मौसम विभाग असर्मथ होगा। अलविनो जैसे चक्रवात कितनी तबाही मचाएगा ये कल्पना का विषय है। मानव इस आगामी विनाश की कल्पना नहीं कर पा रहा है और अपने स्वार्थ के

लिए प्रकृति के दोहन में लगा हुआ है। हम कालिदास के दूसरे संस्करण हो गए हैं, जो जिस डाली पर बैठा है, उसी को काट रहा है।

ओजोन परत का क्षरण, ग्रीन हाउस गैस प्रभाव, कार्बन फुटप्रिंट, कार्बन सिक्वेशटेशन (सघनता), पर्यावरण सूचक, धरती का बुखार, संवहनीय पोषण आदि शब्द पर्यावरण के फैशनेबल शब्द है, जिन्हें उछालकर लोग पर्यावरण के बारे में ये दर्शाते हैं कि प्रदूषण को लेकर बहुत चिंता है पर शब्द श्रृंगारिक अधिक हो गए है और उपयोगी कम। विश्व में प्रतिमिनट लगभग 100 हेक्टर जंगल नष्ट हो रहे हैं, प्रतिदिन कोई-न-कोई प्रजाति कहीं-न-कहीं विलुप्त हो रही है। प्रतिदिन कई मिलियन टन कचरा, अनुपयोगी तेल, प्लास्टिक समुद्र में छोड़ा जा रहा है। और इसको रोकने का मैदानी स्तर पर कार्य परिलक्षित नहीं होता है।

एक महत्वपूर्ण बात है, जो भारत के संदर्भ में पूरा विश्व चाहता है कि भारत कोयले के उपयोग को प्रतिबंधित करे। वैश्विक परिदृश्य है कि औद्योगिक क्रांति से लेकर वर्तमान तक सभी से पिछले दशक तक विकसित देशों ने अपने कोयले का ऊर्जा के रूप में इस्तेमाल कर लिया है और अब वह नई टैक्नोलॉजी से ग्रीन एनर्जी को ओर उन्मुख हो गए है।

परंतु वह चाहते है कि भारत अब कोयले से ऊर्जा उत्पादन रोक दे। इसका कारण यह है कि प्रदूषण फैलाने में लगभग पचास प्रतिशत हिस्सा कार्बन से ऊर्जा उत्पन्न करने से होता है। भारत अपनी ऊर्जा लगभग 70 प्रतिशत कोयले से प्राप्त करता है 25 प्रतिशत हाइड्रोलॉजी ऊर्जा (जलीय ऊर्जा) तथा शेष पांच प्रतिशत सौर ऊर्जा, विंड एनर्जी एंव एटोमिक एनर्जी। इसका आशय है कि यदि विकसित देशों की दादागिरी मान ली, तो भारत ऊर्जा विहीन देश हो जाएगा।

अभी भारत में तीन दशक तक का पर्याप्त ऊर्जा भांडर है, जिससे उसके विकास के मार्ग खुलेंगे। हालाकि भारत ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों का भी बेहतर उपयोग करने लगा है, और वह निश्चित अवधि के बाद कोयले का उपयोग करना समाप्त कने के लिए वचनबद्ध है। शताब्दी से भारत से भारत ने वन व प्राणियों को लेकर पर्यावरण चिंतन किया है। सनातन धर्म के वेद में एक पूरा पृथ्वी सुक्त है, जो पर्यावरण चेतना की मानसिकता से परिपूर्ण है। ऋषियों ने पृथ्वी के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए निवेदित किया है -

''सागर तुम्हारी मेखला,
पर्वत तुम्हारे वक्ष है,
मां वसुन्धरे, मैं तुम्हारा नमन करता,
चरण से करता तुम्हारा स्पर्श जो,
उसके लिए कर दो क्षमा।''

पर्यावरण दिवस पर हम इन भावनाओं को आत्मसात कर उनका दैनिक जीवन में पालन कर पायें, तो यह हमारे पर्यावरण के प्रति सर्वोत्कृष्ट योगदान होगा। ❑❑

लेखक - सेवानिवृत्त वन अधिकारी,
स्वतंत्र सलाहकार, राष्ट्रीय-अंर्तराष्ट्रीय
संस्थाओं से जुड़े हैं

समुद्र में प्लास्टिक प्रदूषण फैला रही नदियां

❑ दीपक सिंह बैस

समुद्र न केवल हमारे पर्यावरण और जलवायु के लिए बहुत मायने रखते हैं साथ ही समुद्रों और उसके आस-पास रहने वाले लोगों के जीवन और जीविका का भी मुख्य स्रोत भी हैं। ऐसे में समुद्रों में बढ़ता प्लास्टिक कचरा इन सभी के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है। इस पर हाल ही में किए एक शोध से पता चला है कि नदियों के जरिए समुद्रों तक पहुंचने वाले करीब 80 फीसदी हिस्से के लिए दुनिया की 1,000 नदियां मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं, जबकि बाकि बचा 20 फीसदी प्लास्टिक कचरा करीब 30,000 नदियों के जरिए समुद्रों तक पहुंच रहा है। यह जानकारी हाल ही में स्वयंसेवी संगठन ओसियन क्लीनअप और उसके सहयोगियों द्वारा किए शोध में सामने आई है, जो कि जर्नल साइंस एडवांसेज में प्रकाशित हुआ है।

समुद्रों में प्लास्टिक कचरा फैलाने वाले सभी प्रमुख पांच देश एशिया में स्थित है जिनमें फिलीपींस, भारत, मलेशिया, चीन और इंडोनेशिया शामिल हैं। यह सम्मिलित रूप से समुद्रों में पहुंचने वाले प्लास्टिक कचरे के करीब 79.7 फीसदी हिस्से के लिए जिम्मेवार हैं। भारत की 1,169 नदियों के जरिए हर साल करीब 126,513 मीट्रिक टन प्लास्टिक कचरा समुद्र में पहुंच रहा है। जिनमें भारत की उल्हास नदी और गंगा नदी प्लास्टिक पहुंचाने वाली टॉप नदियों में दर्ज की गई है। इससे पहले 2017 में किए गए अन्य शोधों में प्लास्टिक प्रदूषण फैला रही प्रमुख नदियों की संख्या 10 से 20 के बीच पाई गई थी। सयुक्त राष्ट्र के अनुसार इनमें में भारत की सिंधु (164,332 टन) और मेघना-ब्रह्मपुत्र-गंगा (72,845 टन) दुनिया के कुछ सबसे अधिक प्लास्टिक मलबे को महासागरों में ले जाती है।

नालों और नदियों से होते हुए यह प्लास्टिक कचरा समुद्रों और महासागरों में मिलता है। प्लास्टिक एक ऐसा उत्पाद है जो अपने निर्माण से लेकर इस्तेमाल और उसके बाद भी खतरनाक होता है। दरअसल, प्लास्टिक पेट्रोलियम पदार्थों के तत्व और रसायनों के इस्तेमाल से बनाया जाता है। ये इस्तेमाल के बाद फेंकने के बाद रासायनिक क्रियाएं करता। समुद्रों में प्लास्टिक से बने कचरे के छोटे और कठोर टुकड़े मछलियों आदि को बहुत प्रभावित करते हैं। चूंकि यह चमकदार होते हैं इसीलिए मछलियाँ इनकी ओर आकर्षित होकर इन्हें खा लेती है, जिससे उन्हें आंत संबंधी बीमारी हो जाती है। बाद में, इन्हीं मछलियों को जो ज़हरीली रसायानिक क्रियाओं की वजह से प्रभावित होती हैं को हम इंसान खाते हैं। इस तरह हम भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे हैं।

नदियां भले ही प्लास्टिक प्रदूषण समुद्र में छोड़ रही हों, लेकिन इसके लिए नदियां जिम्मेदार नहीं है। यह हमारी ही लापरवाही जिसके कारण नदियों में प्लास्टिक का कचरा जमा हो रहा है। नदी के किनारे अवस्थित कई शहरों के अनुपचारित सीवेज का नदी की धारा में प्रवाह किया जाना। कई घनी आबादी वाले शहरों के निकट, औद्योगिक अपशिष्ट और गैर-अपघटनीय प्लास्टिक में लिपटे धार्मिक प्रसाद का नदी में विसर्जन करने से नदी में प्रदूषकों का ढेर एकत्रित हो जाता है। नदी में छोड़े गए या फेंके गए प्लास्टिक उत्पाद और अपशिष्ट पदार्थ बिखंडित होकर अंततः माइक्रोपार्टिकल्स के रूप में विभिक्त हो जाते हैं। यही प्लास्टिक नदियों द्वारा बहाकर समुद्र तक जा रहा है।

भारत में ही सात हज़ार किमी तक कोस्टल एरिया है जहां लोग बसे हैं। हमें कुछ बुनयादी कदम उठाने की आवश्यकता है। ऐसा न करने से हम इंसानों और पर्यावरण के जीव-जंतुओं का सह-अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। हमें इसके लिए निजी स्तर पर कदम उठाने की जरूरत है क्योंकि अरबों की तादाद में इस्तेमाल हो रहे प्लास्टिक बैग को इस्तेमाल करना हमें ही बंद करना होगा। आप यह जानकार हैरान होंगे कि प्लास्टिक के चम्मच, प्लेट्स आदि हजारों लाखों साल में खत्म होते हैं और वहीं पानी वाली बोतल अनंतकाल तक रहती है। ऐसे में, निजी कदम और सिंथेटिक कपड़ों की जगह कॉटन का इस्तेमाल भी एक बड़ा प्रयास साबित होगा। इसके अलावा, बच्चों के प्लास्टिक के खिलौने की जगह उन्हें लकड़ी या इको-फ्रेंडली खिलौने दें। इसके अलावा, पुनः प्रयोग की जाने वाली प्लास्टिक बोतल का ही इस्तेमाल करें, साथ ही, प्लास्टिक री-यूज हो जाए इसके लिए कूड़ेदान का इस्तेमाल करें।

कांच और मिट्टी के बर्तन को ज्यादा इस्तेमाल करें और साथ ही साज-सज्जा के लिये प्लास्टिक से बनी चीज़ों के इस्तेमाल से भी बचें। इसके लिए कुछ नियम कानून बनाने समेत प्लास्टिक को बड़े स्तर पर त्याग करने की जरूरत है चूँकि आज हम 40 से 50 फीसदी इसी का प्रयोग करते हैं। पिछले एक दशक में एक शताब्दी से भी ज्यादा प्लास्टिक उत्पादन हुआ है और यही प्लास्टिक माइक्रोप्लास्टिक के रूप में खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करते हैं। हमारी थोड़ी सी सावधानी पृथ्वी को बचाने में मददगार हो सकती है वरना एक दिन हमारी बेपरवाही और इस व्यवहार के कारण पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त हो सकता हैं। ❑❑

विश्व महासागर दिवस 2021

परिवर्तन के छोटे कदम ईको दोस्त के संग ..

शौर्य ने अभी तक 21 छोटी-बड़ी बोतलों में 5-6 कि.ग्रा. सिंगल यूज प्लास्टिक को कैद किया है ।
साथ ही पॉलीथिन का REUSE करते हुए अपने पिता श्री लालराम चक्रवर्ती के साथ 200 पौधों की नर्सरी तैयार कर रहा है।

गौरी जोशी, कक्षा 10, केन्द्रीय विद्यालय, कसरावद और राघव जोशी, कक्षा 1, श्री गुरुकुल स्कूल, कसरावद, जिला खरगोन
(श्री मनोज और श्रीमती सोनाली जोशी की पुत्री और पुत्र)। पर्यावरण संरक्षण के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहें है,
जिसमे ईको ब्रिक बनाना, पौधरोपण, पक्षियों के लिए दाना-पानी रखना शामिल है।

नर्मदा कि सहायक नदियाँ

चांदनी नदी

नदी सरंक्षण एवं पुनर्जीवन के अंतर्गत चांदनी नदी का चुनाव विकास खण्ड बुदनी में किया गया इसका उद्गम स्थल अमरगढ़ झरने से हुआ और इसका संगम नर्मदा नदी में हुआ। इसकी कुल लम्बाई 18 किलोमीटर है। नदी में 7 महिने पानी रहता है। जिसका उपयोग कृषि कार्य तथा ईंट निर्माण कार्य के लिए किया जाता है। नदी से लगभग 125 हैक्टेयर जमीन सिंचित की जाती है। चांदनी नदी में तीन स्थानों पर छोटी नदियों (नालों) का संगम हुआ है जो कि बरसाती नाले हैं चांदनी नदी पर 4 स्टापडेम बने हुए हैं। चांदनी नदी, के कुछ-कुछ स्थानों पर पानी साल भर उपलब्ध रहता है बाकि स्थानों में 7 महिने रहता है। नदी पुनर्जीवन के अन्तर्गत 2 ग्रामों में नदी संरक्षण समिति गठित की गई है। नदी संरक्षण एवं पुनर्जीवन के अन्तर्गत कार्ययोजना का निर्माण किया गया जिसके तहत 2 नालों पर बोरी बंधान हेतु स्थान चिन्हित किये गये हैं।

विकास खण्ड क्षेत्र में नदी के किनारे, 1000 पौधों का वृक्षारोपण जनसहयोग से किया जा रहा है और नदी, गहरीकरण हेतु मार्च-अप्रैल में गहरीकरण का कार्य प्रस्तावित है। चांदनी नदी पर एक सहयोगी नाला, विंध्याचल पर्वत से, बरसात के समय बहता है। अगर वहां पर बड़ा स्टापडेम बन जाये तो ग्राम चाचमऊ से नर्मदा संगम तक नदी पुनर्जीवित हो जायेगी।

नाम	-	चांदनी नदी
उद्गम	-	अमरगढ़ झरने से, बुदनी, (सीहोर)
संगम	-	नर्मदा में
लंबाई	-	18 किलोमीटर
स्टापडेम	-	चार स्टापडेम
सिंचित क्षेत्र	-	125 हैक्टेयर

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ **लिंग :** _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ **दायित्व/पद :** _____

फोन : _____ **मोबाइल :** _____ **ई-मेल :** _____

पता : _____

जिला : _____ **पिन कोड :** _____ **राज्य :** _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ **दिनांक :** _____ **रूपये :** _____

अदाकर्ता बैंक : _____ **शाखा :** _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)

Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता

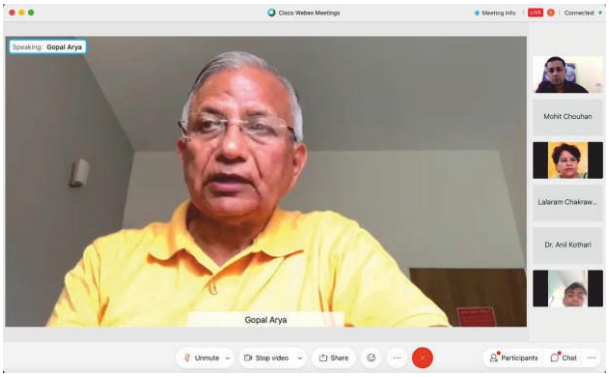

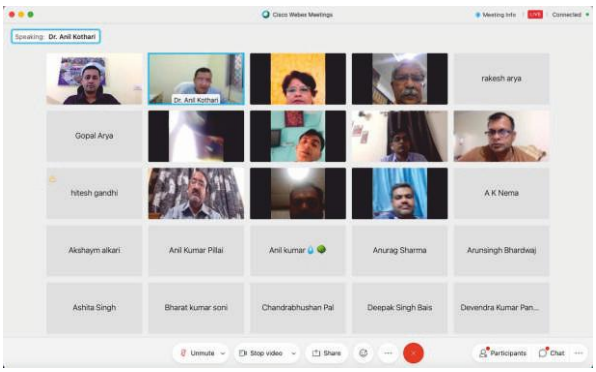

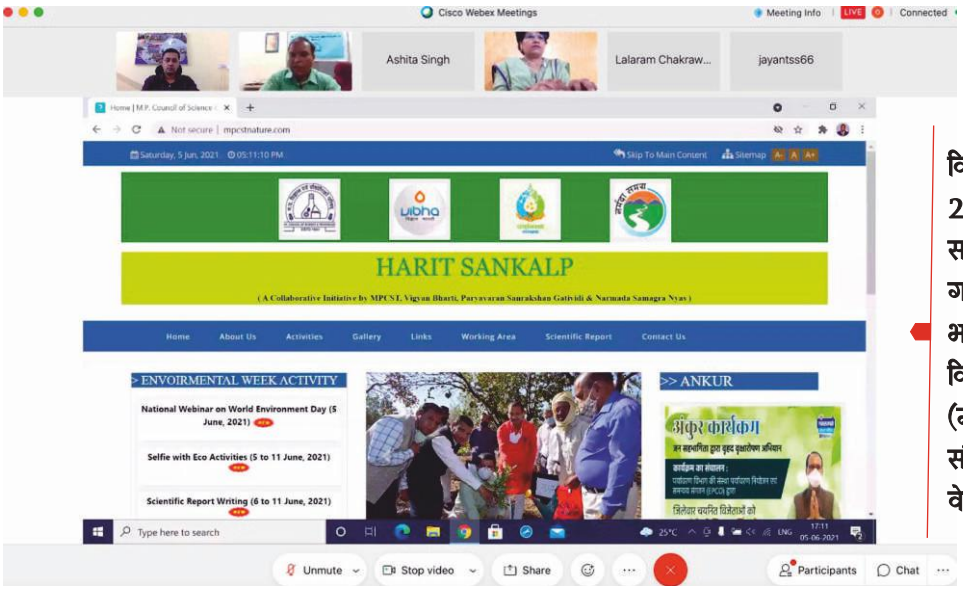

विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून 2021 के अवसर पर नर्मदा समग्र, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि (मध्य क्षेत्र), विज्ञान भारती (मध्य प्रदेश) एवं म.प्र. विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (म.प्र. सरकार का एक स्वायत्त संगठन) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार की झलकियाँ।

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता

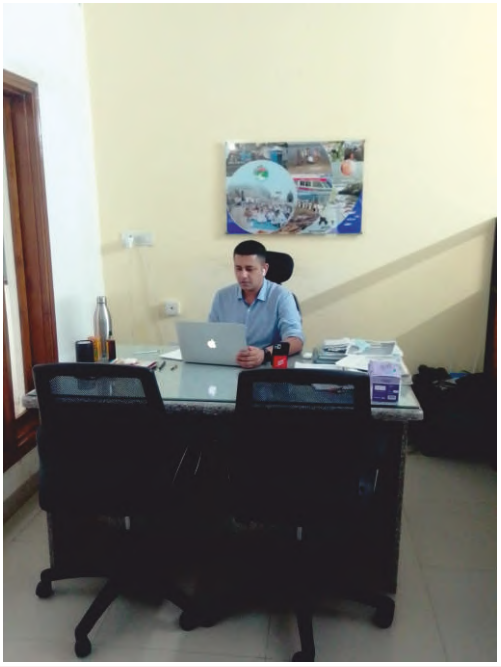

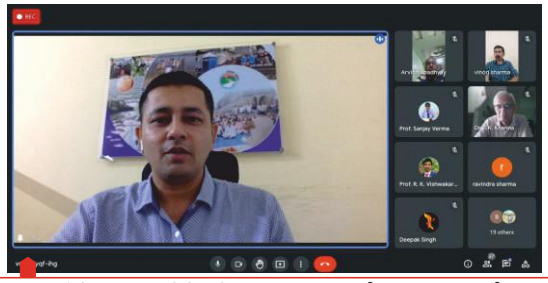

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की पूर्व संध्या पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार "पारिस्थितिकी तंत्र की पुर्नस्थापना - पर्यावरण संरक्षण एक प्राथमिक आवश्यकता" की झलकियां।

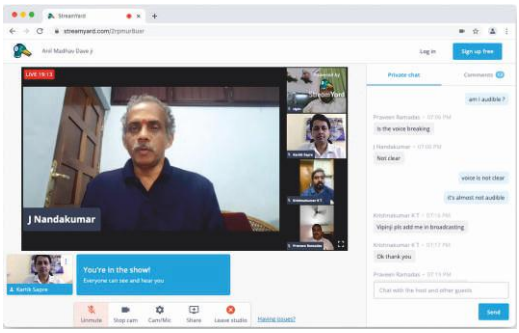

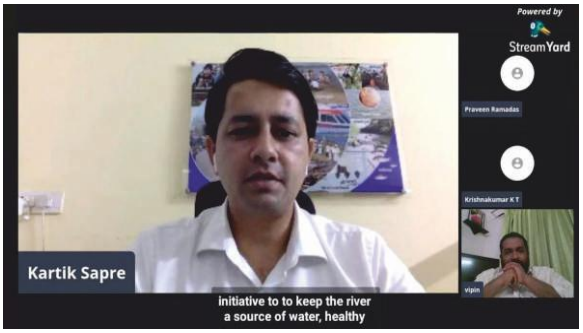

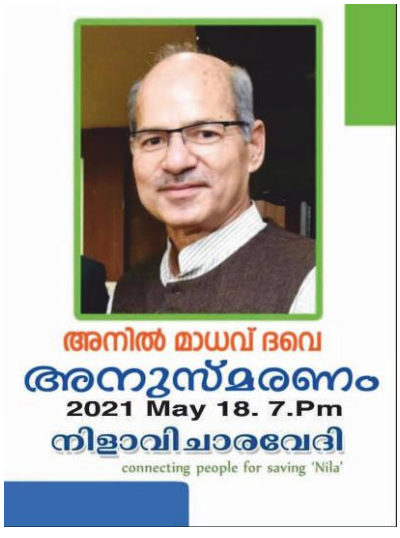

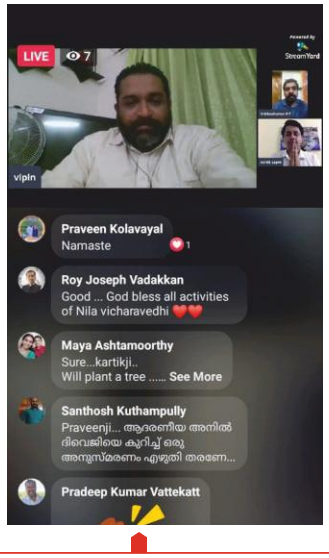

स्व. श्री अनिल माधव दवे जी के चौथे पुण्य तिथि पर टीम नीला द्वारा ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसमें नदी संरक्षण को लेकर और अनिल दवे जी के विचारों को साझा किया गया। नीला के कार्यकर्ताओं को भी पौधे लगाने का अनुरोध किया। जे. नंदकुमार जी और प्रवीण रामदास जी ने अनिल जी के साथ उनके अनुभवों, बातचीत, यादों और उनके व्यक्तित्व के बारे में अपनी स्मृतियाँ सबसे साझा की।

नर्मदा समग्र के कार्य की दृष्टि से मालवा-निमाड़ भाग समन्वयक श्री मनोज जोशी को 'नजर निहाल आश्रम' में 'द्वादश ज्योतिर्लिंग की राष्ट्र धर्म पद यात्रा' के समापन अवसर पर 27.01.2021 को ओमकरेश्वर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समस्त अखाड़ों के महामंडलेश्वर की उपस्थिति में नर्मदा जी के संरक्षण-संवर्धन पर नर्मदा समग्र द्वारा किए जा रहे कार्यों व प्रयासों हेतु सम्मानित किया गया।

कोविड-19 टीकाकरण अभियान

♦ कोरोना टीकाकरण अभियान के अंतर्गत नर्मदा समग्र के सहयोग से रेवा सेवा केंद्र, ग्राम ककराना, जिला अलिराजपुर पर स्वास्थ्य विभाग तहसील सोंडवा द्वारा 33 ग्रामवासियों (वनवासियों) का टीकाकरण किया गया।

♦ टीकाकरण उपरांत नर्मदा समग्र कार्यकर्ताओं ने सभी टिका लगाने वाले व्यक्तियों को एक पौधा और सेवा भारती बड़वानी द्वारा प्रदत्त अन्न सामग्री प्रदान की।

नर्मदा समग्र संकल्प दिवस

"एक घर एक पौधा"

आग्रह है कि हर व्यक्ति/परिवार अपने स्तर पर 'एक पौधा' अपने घर में तैयार करे। उस पौधे की अगले १.५ से २ महीने तक अपने घर में ही देख-रेख कर बड़ा करें। फिर जून अंत में या जुलाई माह में पौधे को अपने आँगन या गमले में लगाए। अगर सम्भव हो तो आस-पड़ोस के लोग मिलकर अथवा सभी कार्यकर्ता मिलकर किसी स्थान का चयन कर पौधों से हरियाली चुनरी बुनें और नर्मदा जी को समर्पित कर दें। इस हरियाली चुनरी की कम से कम अगले ३ वर्षों तक चिंता हो, यह सुनिश्चित करें।

ऋषि ऋण और पितृ ऋण की तरह मातृ ऋण भी होता है। माँ नर्मदा पर हरियाली चुनरी बुनकर इस ऋण से मुक्त होईये। साथ ही यह पौधा ऑक्सिजन, छाया, फल-फूल इत्यादि ऐसे कई अमूल्य लाभ देगा।

आइए संकल्प ले 'एक पौधे' को तैयार करने, लगाने व उसकी चिंता करने का ..

अनिल माधव दवे पुण्यतिथि

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754